ग्रामीण महिला विकास संस्थान

GMVS

वार्षिक प्रतिवेदन 2021–2022

सुर्खियों में ...

ग्रामीण महिला विकास संस्थान

रूरल आई हेल्थ प्रोजक्ट, नागौर

सुरेश सिंह रावत
विधायक, पुष्कर
पूर्व संसदीय सचिव
राजस्थान सरकार

सत्यमेव जयते

कार्यालय :
यूनिवर्सिटी तिराहे के पास
भूणाबाय, अजमेर (राजस्थान)
निवास : बाबा फार्म, मु.पो.–मुहामी,
वाया–गगवाना, जिला–अजमेर (राजस्थान)

शुभकामना संदेश

मुझे यह जानकर अत्यन्त हर्ष हुआ कि ग्रामीण महिला विकास संस्थान, बुबानी–किशनगढ़, जिला अजमेर द्वारा हर वर्ष की भाँति वर्ष 2021–22 की कार्य गतिविधियों का संकलन अपने वार्षिक प्रतिवेदन में प्रकाशित किया जा रहा है।

बालिका के जन्म से लेकर आत्मनिर्भर बनाने तक सरकार उनके साथ कंधे से कंधा मिलाकर खड़ी है। महिलाओं को आत्मनिर्भर और स्वावलम्बी बनाने के लिये हमने भामाशाह योजना में उसे परिवार का मुखिया बनाया है और महिला स्वयं सहायता समूह तथा कौशल विकास के माध्यम से उन्हें आर्थिक रूप से आत्म–निर्भर बनाने का प्रयास किया है। इसके अलावा विधवा, तलाकशुदा महिलाओं के लिये भी अनके योजनाएँ चलाई जा रही है तथा महिलाओं का विकास हमारी मुख्य प्राथमिकता है।

यह सराहनीय है कि संस्थान महिला स्वयं सहायता समूह, उनकी शिक्षा और स्वास्थ्य के साथ–साथ महिला सशक्तिकरण, पर्यावरण संरक्षण, जन चेतना, जल संरक्षण, किसान संवर्धन, बालश्रम उन्मूलन, स्वास्थ्य, शिक्षा आदि क्षेत्रों में कार्य कर रहा है।

(सुरेश सिंह रावत)
विधायक, पुष्कर

GMVS

अनिल कुमार माथुर
अध्यक्ष
ग्रामीण महिला विकास संस्थान

सत्यमेव जयते

प्लाट नं. 111–116, सिद्धि विनायक कॉलोनी
खोड़ा गणेश रोड़, मदनगंज–किशनगढ़
जिला–अजमेर (राज.) 305801
मोबाईल नं. : 94142–58396

अध्यक्षीय सम्बोधन

मैं अत्यंत हर्ष के साथ ग्रामीण महिला विकास संस्थान का 2021–22 का वार्षिक प्रतिवेदन आपके समक्ष प्रस्तुत करना चाहुँगा। कहते हैं कि बड़ा लक्ष्य प्राप्त करने के लिये बस एक मजबूत सोच की जरूरत है। संघर्ष और धैर्य के साथ ही आप बड़ी मंजिल को हांसिल कर सकते हैं। संस्थान भी इन्हीं आर्दशों का पालन करते हुये उन्नति के पथ की ओर अग्रसर है। महिला उत्थान को अपना मूल ध्येय बनाकर संस्थान निरन्तर महिला विकास के लिये कार्य कर रही है। निरन्तर चलने की यह प्रक्रिया आपके सहयोग व मार्गदर्शन के बिना सम्भव न होती। विभिन्न सरकारी तथा गैर सरकारी संस्थानो के सहयोग तथा संस्थान के कार्यकर्त्ताओं की कर्मठता के माध्यम से संस्थान ने कोरोना जैसी महामारी के विपरीत समय में भी जनहितार्थ अनेकों सामाजिक कार्यों को किया गया।

संस्थान द्वारा किये गये कार्यों, कार्यक्षेत्रों व प्राप्त परिणामों को इस प्रतिवेदन के माध्यम से आपके सम्मुख प्रस्तुत करता हूँ। यह प्रतिवेदन उन कार्यों की एक झलक मात्र है।

मुझे यह अटूट विश्वास है कि सदैव की भाँति आगे भी आप सभी का सहयोग हमें प्राप्त होता रहेगा। जिससे संस्थान उन्नति के शिखर पर पहुँचने में सफल सिद्ध हो।

(अनिल कुमार माथुर)
GMVS अजमेर

शंकरसिंह रावत

निदेशक

ग्रामीण महिला विकास संस्थान

सत्यमेव जयते

प्लाट नं. 111–116, सिद्धि विनायक कॉलोनी
खोड़ा गणेश रोड़, मदनगंज–किशनगढ़
जिला–अजमेर (राज.) 305801
मोबाईल नं. : 96729–79032, 90792–07103

निदेशक की कलम से .....

मैं ग्रामीण महिला विकास संस्थान की 25 वर्ष की यात्रा के अनुभव को आपके समक्ष प्रस्तुत करने में हर्ष का अनुभव कर रहा हूँ। संस्थान द्वारा संचालित अनेक गतिविधियों के माध्यम से हम विकास के क्षेत्र में आगे की ओर अग्रसर हैं। कर्म प्रधानता ही संस्थान का मूल मन्त्र है इसी का अनुभव करते हुये अनेको क्षेत्रों में संस्थान की टीम अपने कौशल का प्रर्दशन कर रही है। इस वर्ष नेत्र वसंत कार्यक्रम के माध्यम से मोतियाबिन्द मुक्त समाज करने के लिये संस्थान की टीम कार्यरत है। इसके साथ ही साथ किसानों के लिये भी बाजरा प्रसंस्करण और ग्वारगम व इसबगोल प्रसंस्करण नामक कार्यक्रम का संचालन किया जा रहा है।

संस्थान का उद्देश्य ग्रामीण महिलाओं व किसानों को उन्नति के पथ की ओर अग्रसर करना है। जैसा कि सभी को विदित है कि कोरोना ने पिछले दो वर्षों में मानवता को ऐसी क्षति पहुँचाई है जिसको पूरा करना असम्भव है। ऐसी विकट परिस्थिति में जब कितने ही परिवारों ने अपने स्वजनों को खो दिया है। ऐसे में संस्थान ने दानदाताओं और सभी कार्यकर्ताओं के माध्यम से जरूरतमंद लोगों को प्राथमिक सुविधायें उपलब्ध करायी। संस्थान की स्वास्थ्य टीम ने कोरोना काल में गाँवों में निःशुल्क स्वास्थ्य सुविधायें उपलब्ध करायी। संस्थान मानव उत्थान, महिला सशक्तिकरण व कृषक विकास आदि कार्यों को करते हुये उन्नति के पथ की ओर अग्रसर है।

संस्थान द्वारा क्रियान्वित विभिन्न कार्यक्रमों एवं गतिविधियों के सफल संचालन का विस्तृत वर्णन 2021–22 के वार्षिक प्रतिवेदन के रूप में आपके कर कमलों में प्रेषित है।

मैं इस संस्थान एवं संस्थान के सभी कार्यकर्ताओं के उज्जवल भविष्य की कामना करता हूँ।

(शंकर सिंह रावत)

GMVS अजमेर

GMVS

Gramin Mahila Vikas Sansthan (GMVS), Ajmer (Rajasthan)
Area of Operation and Office Locations

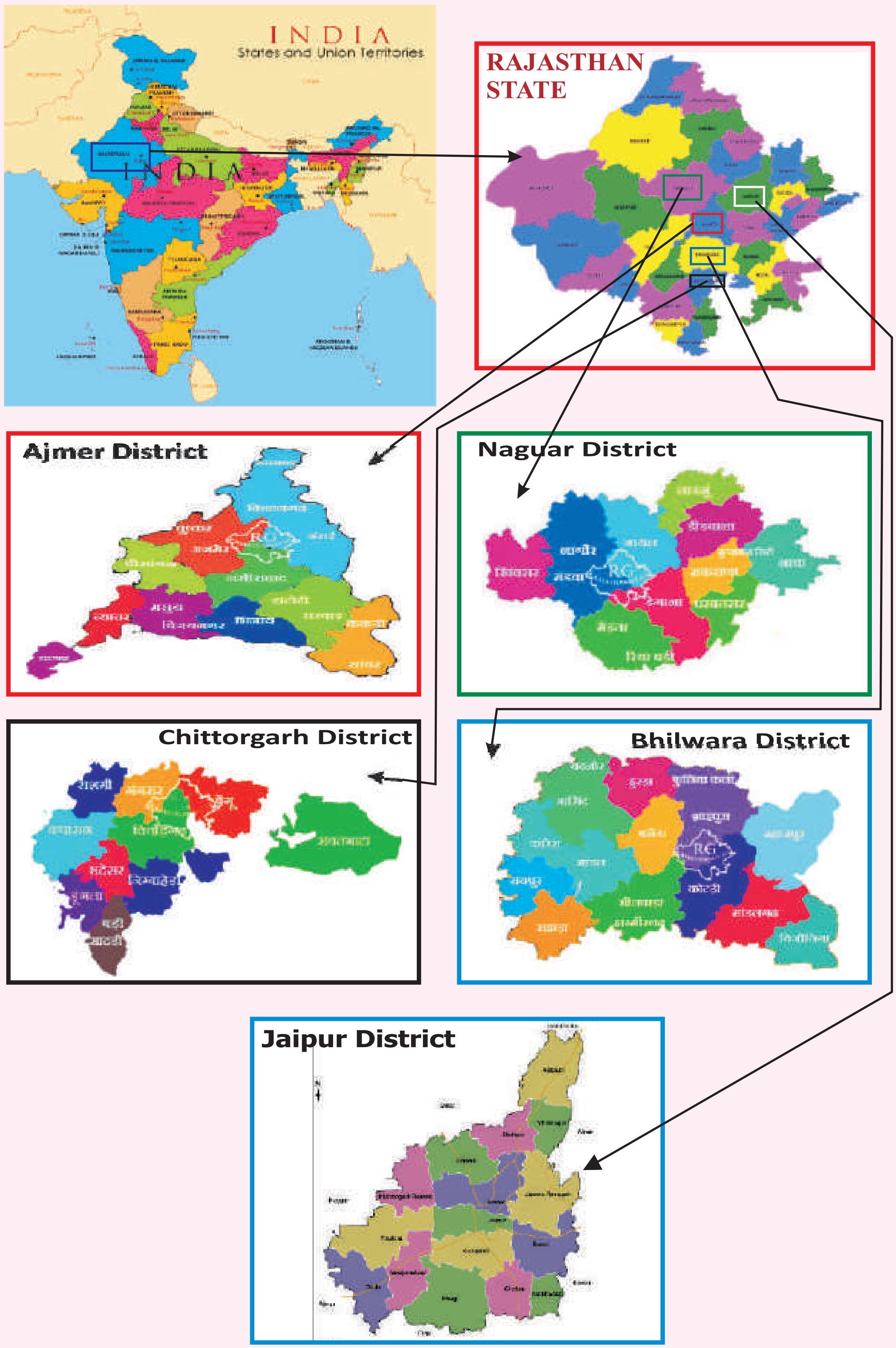

ग्रामीण महिला विकास संस्थान–बूबानी, अजमेर राज.
Gramin Mahila Vikas Sansthan-Bubani, Ajmer, Raj.

पृष्ठभूमि :–

ग्रामीण महिला विकास संस्थान–बूबानी (अजमेर), राजस्थान संस्था पंजीकरण सोसायटी अधिनियम 1958 की धारा 28 एवं आयकर अधिनियम 1961 की धारा 12–ए व 80जी तथा FCRA एक्ट 1976 के अधीन पंजीकृत एक स्वयं सेवी संस्था हैं।

ग्रामीण महिला विकास संस्थान–बूबानी (अजमेर), मानव समाज कल्याण के उद्धेश्य से गठित स्वैच्छिक संगठन है। जो विशेष रुप से ग्रामीण महिलाओं के विकास और उत्थान के लिए वृहद स्तर पर ग्रामीण समुदाय के सामाजिक सशक्तिकरण एवं आजीविका संवर्द्धन के लिए निरन्तर कार्य कर रही है। संस्था समाज मे व्याप्त सामाजिक समस्याओं जैसे– स्वास्थ्य, शिक्षा, बच्चों की देखभाल, पर्यावरण संरक्षण, महिला सशक्तिकरण, स्वरोजगार आदि सामाजिक मुद्दो पर 1998 से विभिन्न प्रकार के कार्यक्रमों का संचालन कर रही है। वर्तमान में संस्था राजस्थान के 05 जिलों यथा अजमेर, जयपुर, चित्तौड़गढ़, नागौर व भीलवाड़ा में विभिन्न गतिविधियों का संचालन कर रही हैं।

विजन :–

ऐसे सशक्त समाज की स्थापना करना जहाँ ग्रामीण महिलाओं की स्थिति को सुदृढ बनाने तथा साथ ही समाज के हर वर्ग को आर्थिक, सामाजिक, शैक्षिक तथा स्वास्थ्य व रोजगार की दृष्टि से आत्मनिर्भर बनाया जाये।

मिशन :–

मानवीय एवं प्राकृतिक संसाधनों के समुचित उपयोग से पिछड़े, अभावग्रस्त, ग़रीब समाज की महिलाओं को स्वयं सहायता समूह, कलस्टर व फेडरेशन के माध्यम से महिलाओं को आर्थिक व सामाजिक दृष्टि से सशक्त करना ग्रामीण लोगों, वंचित वर्ग खासकर महिलाओं/बच्चों को शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाएं, पेयजल व आजीविका के साधन सुनिश्चित करवाना।

संस्था के उद्देश्य :–

- ❖ समस्याग्रस्त गाँवों में स्वच्छ पीने के पानी की व्यवस्था करने में गाँव वालों की मदद करना।
- ❖ ग्रामीण क्षेत्र में ग्रामीणों को स्वास्थ्य के प्रति जागरूक करते हुए उन्हें अच्छा स्वास्थ्य बनाये रखने में मदद करना एवं मातृ–शिशु कल्याण कार्यक्रम को गाँव–गाँव तक पँहुचाना।
- ❖ कृषि एवं पशुपालन के लिए ग्रामीणों को आधुनिक जानकारी उपलब्ध कराकर उन्हें ज्यादा पैदावार एवं ज्यादा पशुपालन में उनकी समस्याओं को कम करने में मदद करना।
- ❖ महिला विकास में ग्रामीण महिलाओं की रूचि पैदा करना तथा महिला कार्यक्रमों के माध्यम से महिलाओं की समस्याओं के निराकरण के लिये महिला मण्डल एवं महिला गोष्ठियों का आयोजन करना।

- ग्रामीण दस्ताकारों को बढ़ावा देने मे सहयोग एवं रोजगार उपलब्ध कराना।
- निम्न आय वर्ग के लड़के लड़कियों को उचित शिक्षा दिलवाने की व्यवस्था करना।
- राजस्थान या राजस्थान के बाहर स्थित संस्थाओं जिनका उद्देश्य ग्रामीण महिला विकास संस्थान, बूबानी जैसा होगा उनसे सहयोग प्राप्त करना एवं गतिविधियों में तालमेल बनाये रखना।
- सडक दुर्घटनाओं को कम करना।
- पर्यावरण स्वच्छ रखने के लिए पेड़ पौधों की जागरूकता रखना।
- भूमि कटाव को रोकने हेतु मेड़ बन्दी।
- महिलाओं को विभिन्न प्रशिक्षणों के माध्यम से आधुनिक तकनीकों से जोड़ना।
- सामुदायिक विकास कार्यक्रम को बढावा देना।
- महिला व बाल विकास कार्यक्रम का संचालन व लोगों को जागरूक बनाये रखना।
- संस्था के उद्देश्यों एवं कार्यकलापों को प्रचारित करना, किताबों का मुद्रण एवं प्रकाशन तथा पुस्तकालयों की स्थापना करना।
- ग्रामीण दस्तकारी को बढ़ावा देने में सहयोग करना क्षेत्र में रोजगार के अवसर पैदा करने हेतु खादी ग्रामोद्योग की गतिविधियों को बढ़ावा देने के लिए नियमानुसार ऋण प्राप्त करना।
- संस्था के द्वारा ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में विभिन्न प्रकार की स्वास्थ्य सेवायें प्रदान की जायेगी जैसे HIV AIDS जागरूकता, सामुदायिक स्तर पर आँखों की जाँच, माता व शिशु स्वास्थ्य एवं स्वास्थ्य पर क्षेत्र विशेष हेतु कार्यक्रम।
- क्षेत्र में अधिक संख्या में ट्रक ड्राईवर परिवारों के होने के कारण संस्था ट्रक ड्राईवर के परिवारों के साथ स्वास्थ्य, शिक्षा व आजीविका पर कार्य करेगी।
- इसके अतिरिक्त संस्था ग्रामीण व शहरी क्षेत्रो में सभी विकास के कार्य क्षेत्र आवश्यकतानुसार करेगी।
- ट्रक चालको एवं क्लीनरों की आँखों की जाँच कर चश्मा प्रदान करना तथा नियमित आँखों की जाँच तथा देखभाल हेतु प्रेरित करना।
- संस्था ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रो में तकनीकी प्रोत्साहन एवं कौशल विकास पर कार्य करेगी।
- संस्था महिलाओं की फेडरेशन को मजबूत करने एवं SHG बनाने व सशक्त करने का कार्य करेगी।
- संस्था मानवीय आवश्यकता हेतु समुदाय को लगातार जाग्रत करेगी।
- संस्था द्वारा शिक्षा प्रसार हेतु शिक्षण कार्य कराया जायेगा एवं तकनिकी विज्ञान प्रशिक्षण की व्यवस्था कराई जायेगी।
- संस्था द्वारा प्राकृतिक सौन्दर्य को बढ़ाने एवं प्रदूषण दूर करने हेतु बंजर भूमि पर वृक्षारोपण का कार्य करने

का व्यवस्था करेगी।

- ❖ महिला अधिकारों के प्रति सदस्यों को सजग करना एवं अधिकार प्राप्ति हेतु वातावरण का निर्माण करना एवं महिला सशक्तिकरण के द्वारा उनकी परिवार एवं समाज में बेहतर जगह बनाना।
- ❖ ऐसी गतिविधि करना जिससे गरीब महिलाओं, स्वयं सहायता समूहों तथा उनके परिवार का सामाजिक व आर्थिक उत्थान हो सके।
- ❖ महिलाओं की सामाजिक कार्यो में सहभागिता सुनिश्चित करना।
- ❖ संस्था आर्थिक रूप से गरीब छात्रों को अपने अध्ययन हेतु पुस्तकों एवं फीस आदि की निःशुल्क व्यवस्था करेगी।
- ❖ लघु वित्त उद्यमिता पर प्रशिक्षण व कौशल विकास का कार्य करना।
- ❖ महिलाओं की जरूरतों जैसे मातृत्व संरक्षण, साक्षरता, शिक्षा, रोजगार और प्रशिक्षण आदि के अवसरों को बढ़ाना ताकि समाज के विभिन्न वर्गो में उन्हें पर्याप्त ध्यान व संसाधन मिल सके।
- ❖ स्कूल और कॉलेजो मे जागरूकता बैठक कर किशोर बालिकाओं को स्वास्थ्य, प्रजनन व यौन शिक्षा के विभिन्न पहलुओं से अवगत कराना।
- ❖ ट्रक चालको एवं क्लीनरों के बच्चों को उच्च शिक्षा हेतु छात्रवृत्ति दिलाना।

लक्षित हस्तक्षेप परियोजना चित्तौड़गढ़ (माईग्रेन्ट टी. आई.)
Target Intervention Program Chittorgarh

राजस्थान स्टेट ऐड्स कंट्रोल सोसायटी जयपुर, द्वारा ग्रामीण महिला विकास संस्थान को पिछले 1 मार्च 2014 से चित्तौड़गढ़ में माइग्रेंट कार्यक्रम संचालन करने के दिशा निर्देश दिए गए हैं जिसके तहत चित्तौड़गढ़ में प्रवासियों के लिए एचआईवी जागरूक कार्यक्रम के साथ टी.बी. कार्यक्रम का भी संचालन किया जा रहा है प्रवासी लोग राजस्थान के अन्य हिस्सों में ही नहीं बल्कि भारत के विभिन्न क्षेत्रों में जाकर काम कर रहे हैं। यह प्रवासी मजदूर मुख्यता बिहार, मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश, हरियाणा, पंजाब, उड़ीसा, अहमदाबाद, झारखंड राज्य के है। कुछ प्रवासी नेपाल से भी संबंधित हैं

हम जानते हैं कि भले ही मशीनी युग चल रहा हो, परंतु बहुत सारे काम ऐसे हैं जिनको करने के लिए प्रवासी लोगों की आवश्यकता होती है। यह प्रवासी मजदूर अपने अपने कार्य में निपुण होते हैं जैसे–निर्माण कार्य, फिटिंग माइंस, ट्रांसपोर्टेड, टेक्सटाइल, लोडिंग, अनलोडिंग कार्यों में सम्मिलित रहते हैं। भारत की अधिकांश हिस्सा कृषि कार्यों में सम्मिलित है परंतु कुछ लोग जो इस कृषि कार्य को छोड़कर अन्य कार्यों को कर के अपना जीवनयापन कर रहे हैं ऐसे ही प्रवासी लोग जिनका शिक्षास्तर, आर्थिकस्तर बहुत ही कमजोर है, ऐसे लोग जो कि स्वास्थ्य के प्रति जीवन के प्रति क्या सही है, क्या गलत समझने के लिए उनको समय नहीं है परंतु उनका अधिकतर समय कार्य करने में गुज़र जाता है ऐसे लोगों के लिए जागरूकता कार्यक्रम की पहल ग्रामीण महिला विकास संस्थान द्वारा चित्तौड़गढ़ में की गई जिसके तहत प्रवासी लोगों को ना केवल एच.आई.वी, टी.बी. व अन्य संक्रमण जैसे शुगर, बीपी अन्य स्वास्थ संबंधी संक्रमण की जानकारी दी जाती है, इनकी जागरूकता के लिए भिन्न–भिन्न गतिविधियों का संचालन किया जा रहा है

प्रवासी मजदूर की हम बात करें तो प्रवासी वह व्यक्ति है जो अपना जीवनयापन करने के लिए अपना घर परिवार छोड़कर एक स्थान से दूसरे स्थान काम करने के लिए 3 से 6 माह के लिए अपने पैतृक गांव से बहुत दूर जाकर कार्य करता है।

वह अकेले होने के कारण उनका व्यवहार अन्य दोस्तों के संपर्क में आने से जोखिम पूर्ण हो जाता है। माइग्रेंट टी.आई. ना केवल चित्तौड़गढ़ बल्कि राजस्थान के अन्य जिलों में भी संचालित है। टी.आई. कार्यक्रम के अनुसार मुख्यतः उच्च जोखिम व्यवहार के लोगों को रजिस्टर्ड करना उनके उच्च जोखिमपूर्ण व्यवहार को परिवर्तन करना उस व्यवहार में कमी लाने के लिए समय—समय पर अनेक गतिविधियों का संचालन करना, वन टू वन व समूह बैठक, बातचीत करना, मीटिंग करना, परामर्श करना, निःशुल्क स्वास्थ्य शिविर में जांच करवाना, एच.आई.वी. की जांच, व टी.बी. की जांच के लिए प्रेरित करना है टी.आई. अनेक गतिविधियों के द्वारा प्रवासी मजदूरों को अनेक सरकारी योजनाओं की जानकारी व जरूरत पड़ने पर उनको सरकारी योजनाओं से लिंक करवाने का कार्य भी किया जाता है। एच.आई.वी., टी.बी. की जांच के बाद लक्षण पाए जाने पर आई.सी.टी.सी. डॉट केंद्रों से जुड़ाव करवाना ताकि प्रवासी लोग अपने स्वास्थ्य के प्रति जागरूक रहें अपने परिवार को भी जागरूक कर सकें।

माइग्रेंट टी.आई. चित्तौड़गढ़, सावा, निंबाहेड़ा, कपासन, चंदेरिया क्षेत्रों में कार्य कर रही है। ग्रामीण महिला विकास संस्थान के ओ. आर. डब्लू. व वी. पी. एल. के माध्यम से टीआई कार्यक्रम को लोगों तक पहुंचाया जा रहा है। यह कार्यक्रम प्रवासी के निवास स्थान व कार्यस्थल के साथ—साथ इनके मिलने के स्थान पर जाकर कांटेक्ट किया जाता है प्रवासी लोगों को होटल, रेस्टोरेंट, चाय की थड़ी, जनरल स्टोर्स, फल का ठेला, पान की दुकान, सब्जी का ठेला, वाइन शॉप, लेबर कॉलोनी, रेजिडेंस कॉलोनी आदि स्थानों पर मिला जा सकता है। यह प्रवासी फैक्ट्री के आसपास क्षेत्रों में ही रहते हैं। सभी प्रवासी लोगों को डी. आई. सी. सुविधाएं उपलब्ध करवाने के लिए सावा व चंदेरिया दो स्थानों पर इसके लिए इंतजाम किया है जहां पर विश्राम मनोरंजन के साथ—साथ स्वास्थ्य से जुड़ी जानकारियों को भी प्राप्त कर सकते हैं

टी.आई. का कार्यक्षेत्र

चितौड़गढ़– रेलवे फाटक इंडियन आयल पंचवटी अन्य

सावा– मीरा कॉलोनी जी डी सी एल एल एन टी

निंबाहेड़ा– जे के मांगरोल जे के निंबाहेड़ा न्यूवोको वंडर अन्य

कपासन– गणपति फर्टिलाइजर के के कोटैक्स मारुति ब्रिक्स अन्य

चंदेरिया– शिवनगर रेलवे ट्रैक डालडा जिंक बीसीडब्ल्यू अन्य

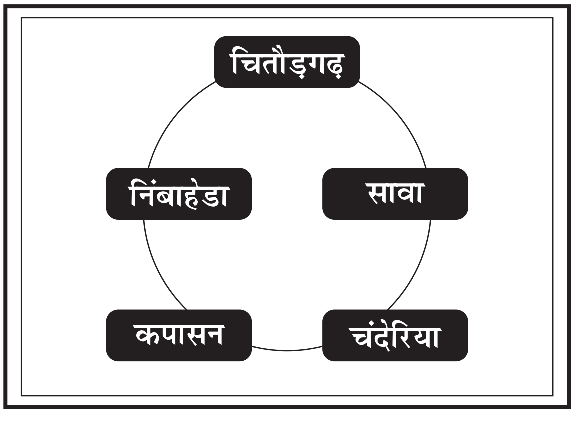

अधिकतर प्रवासी समूह में आते हैं जो कांट्रेक्टर सुपरवाइजर ठेकेदार के द्वारा लाए जाते हैं। इन सभी का कार्य करने का समय 8 से 12 घंटे तक का होता है क्योंकि यह लोग बाहर से आकर काम करते हैं। इसलिए इनका उद्देश्य रहता है कि वह अधिक से अधिक कमाई कर के घर ले जा सके। इस कारण प्रवासी लोग बहुत मेहनत करते हैं उनकी कोशिश रहती है कि वह अधिक से अधिक कार्य कर अधिक धन अर्जित कर सकें। प्रवासियों के लिए खाना बनाने के लिए भंडार की व्यवस्था होती है जो इनके लिए खाना बनाने का काम करता है। प्रवासी अपने गांव से यहां आकर परिवार पत्नी को अकेले छोड़कर काम करने के लिए अन्य जगह चला जाता है। अधिकतर लोग घर से अकेले ही आते हैं परंतु समूह में रहने के कारण तरह तरह के व्यवहार के लोगों से मिलना जुलना रहता है। इस कारण उच्च जोखिम व्यवहार का वातावरण इर्द—गिर्द घूमता रहता है। कुछ प्रवासी उच्च जोखिम व्यवहार के नहीं होते परंतु साथी के कारण जाने अनजाने सम्मिलित हो जाते हैं और धीरे—धीरे उच्च जोखिम

व्यवहार उनकी आदत में सम्मिलित हो जाता है। आइए उच्च जोखिम व्यवहार के बारे में जानते हैं जिस व्यवहार में जोखिम अत्यधिक हो उच्च जोखिम व्यवहार कहलाता हैं, जैसे धूम्रपान करना, दारु, शराब, अफीम, गांजा, हुक्का, गुटका आदि का सेवन करना महिला यौन कर्मियों के साथ असुरक्षित यौन संपर्क करना, उनके अड्डों पर जाना एक से अधिक महिला व पुरुषों के साथ यौन संबंध स्थापित करना, इंजेक्शन या सुई से नशा लेना, इस तरह के व्यवहार संबंधित लोगों को एचआईवी एड्स, टी. बी., यौन रोग का खतरा बहुत अधिक रहता है यह संक्रमण एक प्रवासी से दूसरे प्रवासी में फैलता है क्योंकि प्रवासी मजदूर जागरूक नहीं है। इसलिए वह इन सभी बातों पर समझना होने के कारण स्वास्थ्य के प्रति गंभीरता से नहीं ले पाता और संक्रमित हो जाता है वर्तमान में एचआईवी एड्स और टी. बी. के साथ–साथ अन्य कोरोना कैंसर आदि संक्रमण से ग्रसित हो जाता है टी.आई. द्वारा प्रत्येक गतिविधियों में एच. आई. वी., टी. बी. यौन रोग आदि पर चर्चा की जाती है

टी.आई. सेवाएं गतिविधियां जो संस्थान के माध्यम से चलाए जा रहे हैं निम्नलिखित है–

वन टू वन मीटिंग, समूह मीटिंग, मिडमीडिया जागरूकता शिविर कांग्रेगेशन इवेंट डिमांड जनरेट एक्टिविटी एडवोकेसी, रिव्यूमीटिंग, क्राइसिसडी., आई. सी., परामर्श निशुल्क, स्वास्थ्य जांच, एच. आई. वी. जांच रजिस्ट्रेशन, रेफरल लिंकेजेस, सरकारी, गैर सरकारी योजनाओं से जुड़ाव कराना, एस. टी. आई. फॉलो करना पी. एल. एच. आई. वी. फॉलो आउटलेट आदि सुविधाएं है जो प्रवासियों को उपलब्ध कराई जाती है

1. **वन टू वन मीटिंग**– इनके माध्यम से प्रवासी लोगों को एक–एक या समूह में मिलकर बातचीत कर मीटिंग की जाती है उनको टी.आई. कार्यक्रम के बारे में जानकारी दी जाती है एच. आई. वी. ई. , टी. बी., एस. टी. आई. आर. टी. आई. कंडोम आदि विषयों पर चर्चा करना प्रवासी लोगों को स्वास्थ्य के प्रति सामान्य जानकारियां प्रदान करना है इस बैठक के माध्यम से लोगों के बीच यदि एच. आई. वी एड्स यौन रोग टीवी संबंधित लोग यदि है तो उनके लिए जांच परामर्श की सुविधा उपलब्ध करवाई जाती हैं

2. **मिड मीडिया**– नुक्कड़ नाटकों के माध्यम से प्रवासी लोगों को एच. आई. वी. / एड्स टी. बी. यौन रोग कंडोम अन्य संक्रमण हो जैसे–कोरोना, कैंसर, शुगर, बी. पी. आदि रोगों के बारे में जानकारी नुक्कड़ नाटकों के माध्यम से दी जाती है प्रवासी एच. आइ. वी., एस. टी. आई. से कैसे बच सकते हैं ड्रामा टीम द्वारा प्रवासियों को बहुत ही रोचक मनोरंजन करते हुए समझाया जाता है यदि उनको एड्स, यौन रोग, टी. बी. जैसे संक्रमण हो जाए तो वह किस तरह बच सकते हैं, कहां जाकर इलाज करा सकते हैं आदि जानकारी दी जाती है।

3. **जागरूकता शिविर**– जागरूकता शिविर का आयोजन सदैव स्वास्थ्य शिविर आयोजन होने से पहले किया जाता है। इस शिविर के माध्यम से प्रवासियों को यह सूचना दी जाती है कि निःशुल्क स्वास्थ्य शिविर कब कहां पर किया जाएगा। इस शिविर के माध्यम से अधिक से अधिक लोगों को एच. आई. वी. कार्यक्रम से जोड़ा जाता है।

4. **कोंगरजेशन इवेंट**– प्रवासियों का वह स्थान जहां पर वह बहुत सारी संख्या में एकत्रित होते हैं। इसके माध्यम से टी. आई. परियोजनाओं की जानकारी व उनमें होने वाले स्वास्थ संबंधी अन्य समस्याओं के बारे में बातचीत की जाती है। यह एक ऐसा प्लेटफार्म है जहां पर बिना इकठ्टे किए लोग आसानी से मिल जाते हैं और एच. आई. वी. जानकारी व सूचना का प्रसारण आसानी से किया जा सकता है। इस कार्यक्रम के माध्यम से भी प्रवासी एच. आई. वी., एड्स, एस. टी. आई., टी. बी., कंडोम अन्य संक्रमण से कैसे बच सकते हैं, जागरूक रहने के लिए जानकारी दी जाती है।

5. **डिमाण्ड जनरेशन**– इस गतिविधि में प्रवासी लोगों के लिए जरूरत के अनुसार कार्यक्रम का आयोजन किया जाता है, जैसे–होली, दीपावली, मजदूर दिवस, राखी, राष्ट्रीय त्योहार जिस पर प्रवासी लोगों के लिए कार्यक्रम के

माध्यम से भी प्रवासी एच. आई. वी., एड्स, एस. टी. आई., टी.बी., कंडोम अन्य संक्रमण से कैसे बच सकते हैं मनोरंजक आयोजन कर प्रवासियों को जागरूक रहने के लिए प्रेरित किया जाता है। यह कार्यक्रम प्रवासियों की आवश्यकता अनुसार ही रखा जाता है।

6. **एडवोकेसी**– एडवोकेसी का आयोजन प्रवासी लोगों के लिए सीएसआर, ठेकेदार, सरदार लोगों के साथ टी0आई0 गतिविधियों का आयोजन में बाधा उत्पन्नन हो इसके लिए पैरवी की जाती है। पैरवी करने के लिए एडवोकेसी कमेटी भी बनाई गई है जिसके माध्यम से समय–समय पर कार्यक्रम संबंधी पैरवी करने के लिए मीटिंग का आयोजन किया जाता है। यह एडवोकेसी फैक्ट्री संबंधित लोगों को कार्यक्रम करवाने में सहयोग करती है।

7. **रिव्यू मीटिंग**– टीम मीटिंग का आयोजन साप्ताहिक, मासिक त्रैमासिक होता है। इसके माध्यम से सभी स्टाफ के लोगों के कार्यों का अवलोकन अकाउंटेंट पी.एम. पी.डी. करते हैं। टी. आई. संबंधित सभी रिकॉर्ड का मूल्यांकन काम की जिम्मेदारी पी. एम., पी. डी., की रहती है मीटिंग द्वारा कार्यक्रम में दिए गए टारगेट व किए गए कार्यों का मूल्यांकन किया जाता है जिसके तहत यही पता लग सके कि कार्यक्रम में दिए गए टारगेट को कितना पूरा कर पा रहे हैं यदि कोई कमी आ रही है तो उसपर उसको अगले माह में सुधारने के लिए प्रयास किए जाते हैं।

8. **क्राइसिस**– क्राइसिस कमेटी के माध्यम से प्रवासी लोगों में होने वाले वाद विवाद को सुलझाने में मदद करती हैं क्राइसिस प्रवासियों के मध्य किसी भी प्रकार से हो सकता है क्षेत्र से स्टाफ द्वारा सूचना मिलने पर होने वाले वाद–विवाद को संस्थान की टी. आई. टीम द्वारा समाप्त कराने के लिए मदद करती है इसके लिए आवश्यकता पड़ने पर वह दोनों पक्षों से बातचीत कर सुलह कराने में सहयोग करती है विवाद हाथ से अधिक बढ़ जाए तब ऐसी स्थिति में क्राइसिस कमेटी में वकील द्वारा सहयोग किया जाता है।

9. **डी. आई. सी.** – चित्तौड़गढ़ टी.आई. में डी. आई. सी. हैं। पहली ऑफिस में दूसरी चंदेरिया तीसरी सावा में है यहां प्रवासी लोगों के लिए मनोरंजन, आराम करना व परामर्श क्लीनिक सुविधाएं कंडोम की सुविधा प्रदान की जाती है इसके लिए भी कमेटी बनाई हुई है। कमेटी भी प्रवासियों को क्या–क्या सुविधाएं उपलब्ध करवानी है इसके लिए वह ध्यान रखती है टी. आई. गतिविधियों को कब कहा संचालित करना है इसके लिए डी.आई.सी. कमेटी मदद करती है यहां पर प्रवासियों के संबंधित भिन्न–भिन्न स्वास्थ्य संबंधी जानकारियां उपलब्ध रहती हैं आवश्यकता पड़ने पर यहां निःशुल्क स्वास्थ्य शिविर का आयोजन व अन्य गतिविधियों का संचालन आसानी से किया जाता है। इसमें अधिक से अधिक प्रवासी लोग जुड़ पाते हैं।

10. **परामर्श**– काउंसलर द्वारा एचआईवी के लिए 14 तरह के परामर्श प्रवासियों को देता है। टी. बी., यौन रोग के लिए भी परामर्श का उपयोग करता है प्रवासी के उच्च जोखिम पूर्ण व्यवहार की जानकारी दे कर वह समस्या उसको समझाता है साथ ही उसके उच्च जोखिम व्यवहार में कमी लाने के लिए उसको समझाता है काउंसलर का मुख्य कार्य प्रवासी को एच. आई. वी. के प्रति व अन्य संक्रमण के प्रति जागरूक करना है उसके उच्च जोखिम व्यवहार में कमी लाने के लिए प्रेरित करना है यौन रोगी व एच. आई. वी. संक्रमित व्यक्तियों को समय–समय पर फॉलो करने की जिम्मेदारी भी काउंसलर की रहती है।

11. **निःशुल्क स्वास्थ्य जांच/एच. आई. वी. जांच**– निःशुल्क स्वास्थ्य जांच के साथ एच. आई. वी. की भी जांच की जाती है। इसमें डॉक्टरी जांच के साथ एच. आई. वी. की जांच भी की जाती है यदि वी. डी. आर. एल. किट हो तो यौन रोग की भी जांच की जा सकती है। यह जाँचें बिल्कुल मुफ्त की जाती है।

12. **रजिस्ट्रेशन**– टीआई में रजिस्ट्रेशन तीन माध्यम से होता है पहला परामर्श दूसरा स्वास्थ्य शिविर तीसरा डी. आई. सी. इन सभी सभी सुविधाओं में से किसी एक के माध्यम से प्रवासी का रजिस्ट्रेशन किया जाता है प्रत्येक

साल 10000 लोगों का रजिस्ट्रेशन करने का टारगेट दिया गया है। प्रवासी का व्यवहार उच्च जोखिमपूर्ण है तभी यह रजिस्ट्रेशन किया जाता है।

13. रेफरल– रेफरल व लिंकेज इसके माध्यम से प्रवासी लोगों को आवश्यकतानुसार उनको सर्विसेज से लिंक वह रफेल करवाया जाता है। एच. आई. वी. की जांच में पॉजिटिव आने पर आई. सी. टी. सी. ए. आर. टी. से लिंक करवाया जाता है। यदि टी. बी. है तो डॉट सेंटर से लिंक करवाना होता है।

14. सरकारी व गैर सरकारी योजनाओं से जुड़ाव– प्रवासियों को सरकारी सुविधाओं से जोड़ना होता है ताकि उनको सरकारी सुविधाएं आसानी से प्राप्त हो सके।

15. एस. टी. आई. फॉलोअप करना– प्रवासी को स्वास्थ्य जांच करने के बाद यदि यौन रोग के लक्षण पाए जाते हैं तो उन लोगों को परामर्श करता द्वारा फॉलोअप करने के लिए कहा जाता है फॉलोअप से यह जाना जा सकता है कि यौन रोग में उसको आराम हुआ या फिर कुछ दिक्कत है यदि कोई परेशानी है तो वह फिर से डॉक्टरी जांच करवा कर दवाइयां ले सकता है।

16. पी. एल. एच. आई. वी. फॉलोअप करना– जो प्रवासी एच. आई. वी., एड्स संक्रमित है ए. आर. टी. से दवाई ले रहे हैं ऐसे व्यक्ति को निरंतर फॉलोअप करना है कि वह प्रत्येक महीने अपनी दवाइयां समय–समय पर लेता रहे। हर 6 माह में फिर से अपना वायरल लोड करवाएं जिससे एच. आई. वी. संक्रमण का खतरा कितना है उसकी जानकारी समय–समय पर मिलती रहे यदि कोई व्यक्ति दवाई नहीं ले रहा है। या बीच में बंद कर दी हैं ऐसे व्यक्ति को फिर से फॉलोअप कर ए. आर. टी. से जुड़वाएं ताकि उसकी दवाइयां फिर से शुरू की जा सके साथ ही उसको सरकारी सुविधाओं से भी जुड़वाना है जैसे बस पास, राशन की व्यवस्था मुख्य है।

प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष भी 2021–22 में 10000 प्रवासी मजदूर लोगों को जिनका व्यवहार उच्च जोखिमपूर्ण है, उन सभी प्रवासी लोगों को टीआई परियोजना से जोड़ा गया एच.आई.वी. के प्रति जागरूक किया गया।

यह प्रवासी लोग निनिम्न राज्यों से हैं–

मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश, पंजाब, झारखंड, हरियाणा, बिहार, गुजरात, उड़ीसा, असम, नेपाल से संबंधित है अधिकतर प्रवासी लोग इन राज्यों के जिलों पंचायतों तहसीलों मे गाँव से हैं ग्रामीण लोगों की संख्या ज्यादा है क्योंकि गांव में कामधंधे बहुत कम है जिसके कारण लोगों को प्रवास कर अन्य जिलों राज्यों में जाना पड़ता है प्रवासी लोग बहुतायत मात्रा में एक राज्य से दूसरे राज्य में शीघ्रता से पलायन करते हैं क्योंकि उनकी दैनिक जरूरतों को पूरा करने के लिए धन प्राप्त नहीं हो पाता इससे साफ पता चलता है कि भारत देश में प्रवासी धन कमाने के लिए अन्य क्षेत्रों में जाते हैं।

परियोजना के उद्देश्य– 31 इंडिकेटर उसका अनुसरण करना 40000 लोगों के साथ एकलव समूह बैठक करना डी. आई. सी. में एकल व समूह बैठक करना, कंडोम उपलब्ध करवाना, महत्व समझाना, अधिक से अधिक प्रवासी लोगों को टी. आई. से जोड़ना, सरकारी, गैर सरकारी सुविधाओं को लोगों तक पहुंचाना, 10,000 उच्च जोखिम व्यवहार के प्रवासी लोगों का रजिस्ट्रेशन करना, परामर्श करना, निःशुल्क स्वास्थ्य शिविर के द्वारा जाँच करना, एच. आई. वी. जाँच कर पॉजिटिव आने पर रेफरल करना, प्रवासी को अन्य राज्यों में जाने पर वहां भी सरकारी सुविधाओं को उपलब्ध करवाने के लिए परामर्श करना, प्रवासियों को उनकी सुविधा के अनुसार कई कार्यक्रम उपलब्ध करवाना, इसके साथ ही प्रवासी लोगों को स्वास्थ्य संबंधित जानकारी प्रदान करना जिससे वह अपने स्वास्थ्य के प्रति जागरूक रहें।

रणनीति– उच्च जोखिम व्यवहार के प्रति जागरूकता लाना जिससे वे सुरक्षित व्यवहार को अपना सके, टी. आई. गतिविधियों व सर्विसेस में अधिक संख्या से लोगों को जोड़कर सुविधा प्रदान करना बड़ी साइट्स कवरेज करना जिससे अधिक लोगों तक पहुंच बन सके। मिडमीडिया के माध्यम से एच. आई. वी., एड्स, टी. बी., यौन रोग के प्रति कंडोम के प्रति जागरूकता लाना, महिलाओं में पुरुषों के अनुसार बैठक का आयोजन करना, कंडोम की उपयोगिता समझाना, अनुकूल वातावरण बनाकर सर्विसेस पहुंचाना, गतिविधियों व सर्विसेज का समय प्रवासियों के समय अनुसार हो, एडवोकेसी क्राइसिस मैनेजमेंट सभी की व्यवस्था प्रवासियों के अनुसार होनी चाहिए।

उपलब्धि– फैक्ट्रियों में आसानी से पहुंच बनाना एच. आई. वी. की जांच उनके स्थान पर सी. बी. टी. के माध्यम से करना, कलेक्टर एवं रसद विभागों तक पहुंच, सुपरवाइजर की सहायता प्राप्त करना उनके अनुसार महिलाओं को ध्यान में रखते हुए सर्विस गतिविधियां प्रदान कराना पी. एम., आई. सी. टी. प्रभारी परामर्शकर्त्ता एलटी के साथ नेटवर्क बनाना, प्रवासियों को सुगमता से कंडोम आउटलेट से प्राप्त कराना, प्रवासियों को सरकारी व गैरसरकारी योजनाओं की जानकारी देना, एडवोकेसी क्राइसिस के माध्यम से प्रवासी को सर्विस के प्रति समझ बनाना, प्रवासियों की समस्याओं का समाधान करना।

कोरोना की सामान्य जानकारी, कोरोना वैश्विक महामारी है जिसके कारण देश को काफी नुकसान हुआ प्रवासी मजदूरों को अप्रैल मई जून माह 2021 में काफी परेशानियों का सामना करना पड़ा हैं। जहां काम धंधा उतना अच्छा नहीं चल रहा था। गंभीर परिस्थिति में भी लोगों के पास अन्नधन की काफी कमी का सामना करना पड़ा है। ऐसे हालातों में संस्थान द्वारा मास्क, सैनिटाइजर राशन आदि की व्यवस्थाएं लोगों तक पहुंचाई है।

आभार–

संस्थान में विधायक श्रीमान चंद्रभानसिंह आक्या, पूर्व चैयरमैन श्रीमान सुरेश झंवर साहब, पूर्व कलेक्टर चेतन देवड़ा, श्रीमान शांतिलाल सुथार,, पिए कलेक्टर साहब श्रीमान हितेश जोशी (रसद विभाग श्रीमान हिम्मत सिंह एसपी ऑफिस बाबू, डॉक्टर अनीश जैन, डॉक्टर राकेश भटनागर, भरतजी शर्मा, श्रीमान समरेश गुप्ता, दिल्ली टी. एस. यू. राजस्थान स्टेट ऐड्स कंट्रोल सोसायटी निदेशक डॉक्टर श्रीमान रविप्रकाश शर्मा, जे. डी. सुनील कुमार विश्नोई, भदेसर प्रधान साहिबा सुशीला कँवर, मीडिया से सुभाषजी बैरागी, गोपालजी चतुर्वेदी, वंदना जी दशोरा, उमेशजी मेनारिया, लक्ष्मणजी शर्मा आप सभी का बहुत बहुत आभार जिन्होंने समय समय पर टी.आई. गतिविधियों में सहयोग किया ।

हंस मोबाईल मेडिकल सर्विसेज कार्यक्रम–बूबानी, अजमेर
Hans Mobile Medical Services Program

द् हंस फाउण्डेशन– नई दिल्ली के वित्तिय सहयोग से ग्रामीण महिला विकास संस्थान द्वारा हंस मोबाईल मेडिकल सर्विसेज कार्यक्रम के तहत श्रीनगर, सिलोरा तथा पीसांगन पंचायत समिति के 20 गाँवो में स्वास्थ्य सेवायें प्रदान की जा रही है। जैसा कि यह सभी को ज्ञात है कि स्वास्थ्य सिर्फ बिमारियों की अनुपस्थिति ही नहीं बल्कि एक पूर्ण शारीरिक, मानसिक और सामाजिक स्वस्थता है। इसलिये कहा गया है (पहला सुख निरोगी काया) स्वस्थ व्यक्ति अपने रोजमर्रा की गतिविधियों से निपटने के लिए किसी भी परिवेश में अनुकूल परिस्थितियों से भी स्वयं को निकालने में सक्षम होते है। कहा भी गया है कि स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मस्तिष्क निवास करता है। कोई आदमी तभी अपने जीवन का पूरा आनन्द उठा सकता है जब वह शारीरिक तथा मानसिक रुप से स्वस्थ रहे। अगर हम अपने शरीर का ध्यान रखेंगे, संतुलित आहार लेंगें तथा नियमित रूप से व्यायाम करेंगे तो ही स्वस्थ रहेंगें। स्वस्थ रहने के लिये नशे से मुक्ति आवश्यक है। स्वस्थ व्यक्ति ही आनंदमय जीवन व्यतीत कर सकता है।

ग्रामीण महिला विकास संस्थान–बूबानी, अजमेर ने इन्हीं बातों को ध्यान मे रखते हुए स्वास्थ्य को मुख्य उद्देश्य के रुप मे चुना गया है। ग्रामीण महिला विकास संस्थान–बूबानी, अजमेर के द्वारा समय–समय पर स्वास्थ्य सम्बन्धित विभिन्न मुद्दों पर कार्यक्रमों का संचालन किया जा रहा है और ज्यादा से ज्यादा लोगों को इन कार्यक्रमों से जोड़कर लाभ पहुँचाया जाता है।

कार्यक्रम की शुरुआत :–

संस्थान द्वारा अजमेर जिले के दूर–दराज स्थित गाँवों मे स्वास्थ्य एवं चिकित्सा सुविधाओं की एक रिर्पोट प्रोजेक्ट रुप में द् हंस फाउण्डेशन–नई दिल्ली, को सौंपी गई। द् हंस फाउण्डेशन–नई दिल्ली के मूल्यांकन के द्वारा 13 मई, 2014 को संस्थान द्वारा अजमेर जिले के श्रीनगर पंचायत समीति के 12 गाँवों में इस कार्यक्रम की शुरुआत की गयी । कार्यक्रम के द्वारा एक वित्तीय वर्ष में 12 गाँवो में स्वास्थ्य सेवायें प्रदान की गई हैं। शुरुआत में परियोजना का मूल्यांकन दांता गांव में था लेकिन उसके पश्चात् वर्तमान में बूबानी में स्थित है। जहाँ पर कार्यक्षेत्र से रेफर मरीजों का उपचार भी किया जाता है। यह परियोजना मई 2014 से वर्तमान तक लगातार जारी है और समय–समय पर कार्यक्षेत्र में बदलाव किया जाता है। नये गाँवो को कार्यक्षेत्र में जोडा जाता है और कम से कम 3 साल तक सेवायें प्रदान की जाती है। इन वर्षो में लक्ष्य की प्राप्ति कर नये गाँवो का चुनाव किया जाता है। इस वर्ष (2021 से 2022) तक संस्थान द्वारा अजमेर जिले के श्रीनगर, सिलोरा तथा पीसांगन पंचायत समीति में 20 गाँवों का चयन किया गया है, जिसमें वर्ष 2020 सें स्वास्थ्य एवं चिकित्सा सुविधाएँ प्रदान की जा रही हैं।

संस्थान द्वारा हंस मोबाईल मेडिकल सर्विसेज प्रोग्राम का संचालन मई 2014 से किया जा रहा है। कार्यक्रम के द्वारा एक वित्तीय वर्ष में 12 गांवों में स्वास्थ्य सेवायें प्रदान की जाती है। इन वर्षो में टीम के द्वारा गुवारडी, शाला की ढाणी, कालेडी, आखरी, गुदली, हाथीपट्टा, मानपुरा, नारगाल, लीरी का बाडिया, टण्टिया, मोहनपुरा तथा सराणा आदि 12 गांवों में स्वास्थ्य सेवायें प्रदान की गयीं। माह में एक गाँव में दो बार स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया गया। इस सफलता को देखते हुए इस कार्यक्रम को आगे बढाते हुए वर्ष 2020–21 से 2021–22 तक संस्था ने 20 गाँवों में स्वास्थ्य सुविधाएँ प्रदान की जा रही है। एक माह में दो बार तथा प्रत्येक दिन दो गांवों में स्वास्थ्य शिविरों का आयोजन किया जा रहा है। जिसके अर्न्तगत लाभान्वित होने वाले गांवों की सूची अधोलिखित है – खोडा गणेश, दांता, धामेडी, देवमन्द ढाणी, निम्बुकिया, टिढाणा, नौलखा, भवानीखेडा, मानपुरा, रामपुरा, मोहनपुरा, कानाखेडी, बडल्या, नेडल्या, बडी होकरा, छोटी होकरा, गोवलिया, झोपड़ा, नाडी का दढ्डा तथा बनियातों की ढाणी। कार्यक्रम के तहत एक एम्बुलेंस है जो चिकित्सा से सम्बन्धित विभिन्न उपकरणों से युक्त है। यह एक छोटा

चलता–फिरता अस्पताल है। टीम के द्वारा सुबह 9:00 से 4:00 बजे तक 20 गाँवों मे स्वास्थ्य शिविर लगाया जाता है। इसके बाद 4:00 से 5:00 बजे तक बुबानी (स्टेशनरी हेल्थ सेन्टर) पर मरीजों का उपचार किया जाता है। स्वास्थ्य शिविर मे पूरी टीम उपस्थित रहती है।

कार्यक्रम के उद्देश्य :-

1. परिवार में महिलाओं तथा बच्चों की स्वास्थ्य स्थिति में सुधार लाना।
2. परिवार व समाज में महिलाओं की स्वास्थ्य की महत्ता पर जोर देना।
3. महिलाओं तथा बच्चों को स्वास्थ्य एवं चिकित्सा सेवायें उपलब्ध करवाना।
4. प्रत्येक गर्भवती व धात्री महिला तक स्वास्थ्य एवं चिकित्सा सेवाओं की पहुँच बनाना।
5. महिलाओं को प्रसव पूर्व सुरक्षित प्रसव तथा प्रसव पश्चात् देखभाल को समझाकर स्वस्थ रहने के लिए प्रेरित करना।
6. महिलाओं को संस्थागत प्रसवों के लिए प्रेरित करना तथा उन्हें विभिन्न सरकारी योजनाओं जैसे– 104 व 108 सेवाओं, जननी मातृ व शिशु योजना, मुख्यमंत्री राजश्री योजना के लाभों की जानकारी देना।
7. नियमित जाँच, देखभाल, उपचार, संतुलित आहार, टीकाकरण तथा संस्थागत प्रसव आदि के द्वारा मातृ मृत्युदर व शिशु मृत्युदर को कम करना।
8. समुदाय को बालिका बचाने हेतु जागरुक करना।
9. वंचित वर्ग तक स्वास्थ्य व चिकित्सा सुविधाओं को पहुँचाना।
10. पर्यावरण प्रदूषण को कम करने पर जोर देना तथा स्वास्थ्य मे सकारात्मक बदलाव हेतु बनाना।
11. जागरुकता बैठकों का आयोजन कर विभिन्न स्वास्थ्य सम्बंधित मुद्दों जैसे– स्वच्छता, पोषाहार, मानसिक स्वास्थ्य परामर्श, आँखों की देखभाल, स्वच्छ वातावरण, मादक द्रव्यों के सेवन को कम करने हेतु परामर्श तथा विभिन्न बिमारियों जैसे– डेंगु, चिकनगुनिया, मलेरिया, अस्थमा, कैंसर, कुपोषण, मोटापा, एच.आई. वी./एड्स, एनीमिया, कमजोरी आदि के प्रति जागरुकता लाना।
12. विभिन्न बिमारियों की जाँच व उपचार के साथ–साथ ग्रामवासियों को बिमारियों के कारण, लक्षण, उपचार व रोकथाम के प्रति जागरुक करना।
13. स्वास्थ्य आवश्यकताओं तथा उनके हक के प्रति जागरुक कर उचित कदम उठाने के लिए प्रेरित करना।
14. बालिका जीवितता एवं सुरक्षित मातृत्व से जुडे मुद्दे पोषाहार एवं स्वास्थ्य के बारे मे महिला, परिवार तथा समाज मे जागरुकता को बढ़ावा देना।
15. विभिन्न सरकारी योजनाओं की जानकारी बैठकों के माध्यम से समय–समय पर देना तथा योजनाओं से उचित लाभार्थियों को जोड़कर लाभ पहुँचाना।
16. महिलाओं को आत्मनिर्भर बनने हेतु जागरुक करना।
17. बेटी बचाओ बेटी पढाओ के लिए ग्रामीण समुदाय के लोगों को प्रेरित करना।
18. जनसंख्या नियंत्रण व स्वास्थ्य की दृष्टि से महिलाओं को बच्चों के बीच कम से कम तीन से पाँच वर्ष का अंतर रखने के लिए प्रेरित करना।
19. ग्रामीणों को कोरोना के बारे में बताना जैसे कि इसके क्या लक्षण हैं, इसके बचाव के उपाय व कैसे इस बीमारी के रहते अपना ध्यान रखा जाना चाहिए।

GMVS

कार्यक्रम के द्वारा स्वास्थ्य शिविर में विभिन्न प्रकार की स्वास्थ्य सुविधाएँ-

कार्यक्रम के द्वारा स्वास्थ्य शिविर मे विभिन्न प्रकार की स्वास्थ्य सुविधाएँ जैसे – चिकित्सा जाँच, दवाइयाँ, काउन्सिलिंग, गर्भवती महिला, स्वास्थ्य जाँच, महिला तथा शिशु स्वास्थ्य जाँच, देखभाल व घर भ्रमण कर मरीजों का स्वास्थ्य जाँच, रेफर आदि के अलावा स्वास्थ्य सम्बन्धित विभिन्न मुद्दों पर जागरुकता बैठकों का आयोजन किया जाता है। टीम के द्वारा महिलाओं, किशोर–किशोरी, बालक–बालिकाओं तथा कार्यक्रम के तहत निर्मित ग्राम स्वास्थ्य कमेटी के सदस्यों के साथ जागरुकता बैठकों का आयोजन किया जाता है। कार्यक्रम के तहत 20 गाँवों में 1–1 स्वास्थ्य कार्यकर्त्ता को नियुक्त किया गया है। स्वास्थ्य कार्यकर्ता के द्वारा गांव में भ्रमण किया जाता है। जिसमें उसके कई कार्य होते है। जैसे– गर्भवती तथा धात्री महिला की नियमित देखभाल, टीकाकरण, बच्चों का टीकाकरण, पोशाहार, मरीजों का फोलोअप, टीकाकरण दिवस पर गाँव की आंगनबाड़ी पर पँहुच तथा टीकाकरण मे सहयोग, गाँव में स्वास्थ्य सम्बन्धित मुद्दों पर चर्चा एवं जागरुकता, परिवार नियोजन के साधनों के प्रति जागरुकता तथा उपयोग पर जोर, मरीजों की रेफर समस्याओं पर चर्चा तथा निवारण विभिन्न बिमारियों की जानकारी, सरकारी योजनाओं की जानकारी देना तथा निवारण, विभिन्न बिमारियों की जानकारी, सरकारी योजनाओं की जानकारी देना तथा सरकारी योजनाओं से जोड़कर लाभ पहुँचाना आदि।

स्वास्थ्य कार्यकर्ता द्वारा समय–समय पर घर भ्रमण कर स्वास्थ्य के बारे में उचित जानकारी प्रदान की जाती है। महिलाओं को उचित मार्गदर्शन भी प्रदान किया जाता है तथा महिलाओं की समय–समय पर घर भ्रमण कर देखभाल की जाती है। कार्यक्रम के बेहतर कार्यान्वन तथा उद्देश्य की सफलतापूर्वक प्राप्ति हेतु प्रत्येक गाँव में गाँव स्तर पर एक ग्राम स्वास्थ्य कमेटी का गठन किया गया है। गाँव के महिला व पुरुष ही इस कमेटी के सदस्य हैं। गाँव स्तर की समस्याओं पर चर्चा तथा निवारण करने हेतु प्रत्येक माह में एक बार जागरुकता बैठक का आयोजन किया जाता है तथा नवीनतम जानकारी प्रदान की जाती है।

कोविड-19

संस्था ने वर्ष 2020–21 मे आयी महामारी कोविड–19 से बचाव के लिए भी घर–घर जाकर लोगों को जागरुक किया और साथ ही जरुरतमंद लोगों को आवश्यक सामग्री का वितरण किया जैसे–मास्क, खाद्य सामग्री, सेनेटाईजर, सेनेटरी नेपकीन आदि। संस्था के कार्यकर्ताओं द्वारा उन्हें सामाजिक दूरी रखने, मास्क लगाने, बार–बार हाथ धोने तथा बिना कारण घर से बाहर न निकलने के लिए प्रेरित किया।

क्र.सं.	वितरित सामग्री का नाम	लाभान्वित व्यक्तियों की संख्या
1	मास्क	20000
2	खाद्य सामग्री (आटा, दाल, चावल, मसाले इत्यादि)	8000 परिवार
3	सेनेटाईजर	5000
4	सेनेटरी नेपकीन	10000

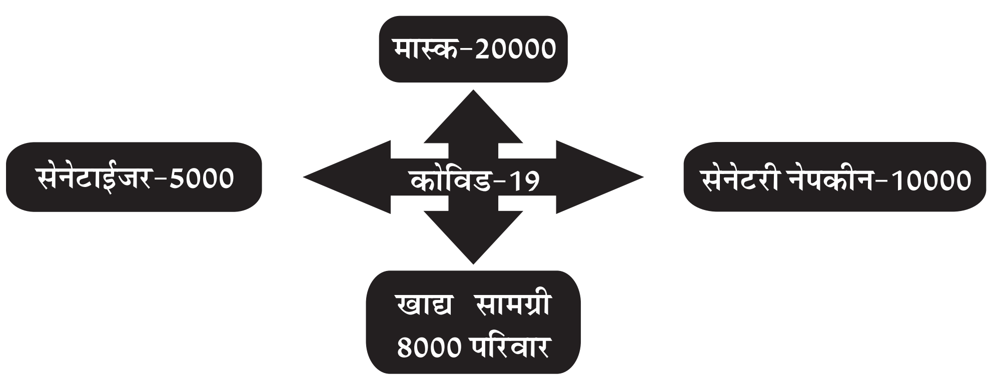

रणनीतियाँ :–

- ❖ कार्यक्रम की शुरूआत में गांवों के प्रत्येक घर का सर्वे किया तथा कार्यक्रम की जानकारी दी गयी।
- ❖ स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं द्वारा गाँव में घर–घर जाकर हंस की गाड़ी के आने की दिनाँक व समय के विषय में सूचना दी।
- ❖ एम्बुलेंस का टीम सहित गांव में समय पर पहुँचकर स्वास्थ्य शिविर आयोजित करना।
- ❖ धात्री महिलाओं को उनके घर जाकर विजिट कर फॉलोअप करना तथा स्वास्थ्य संबंधी मुद्दों पर चर्चा करना।
- ❖ स्वास्थ्य शिविर पर आये मरीजों का उचित उपचार तथा आवश्यक सलाह देना।
- ❖ महिला स्वयं सहायता समूह की महिलाओं को एक स्थान पर एकत्रित कर जागरूकता बैठकों का आयोजन करना।
- ❖ गाँव के उच्च माध्यमिक तथा माध्यमिक विद्यालयों की छात्राओं का एक समूह बनाकर जागरूकता रैली तथा बैठक आयोजित करना।
- ❖ गाँव स्तर पर निर्मित ग्राम स्वास्थ्य कमेटी के सदस्यों के साथ जागरूकता बैठकों का आयोजन करना।
- ❖ जागरूकता बैठकों में विभिन्न मुद्दें जैसे–स्वास्थ्य संबंधी मुद्दें, स्वच्छ आदतें, टीकाकरण, विटामिन ए, पोशाहार, स्वच्छता, शारीरिक देखभाल, आँखों की देखभाल, मानसिक स्वास्थ्य, सबस्टे एब्यूज, संस्थागत प्रसव, प्रसव पूर्व, सुरक्षित प्रसव, प्रसव बाद देखभाल, विभिन्न सरकारी योजनाओं की जानकारी तथा सामाजिक कुरीतियों जैसेः– दहेज प्रथा, बाल विवाह, शराब, नशाखोरी, अंधविश्वास, भेदभाव आदि पर जागरूकता व काउंसिलिंग सेवायें प्रदान करना।
- ❖ प्रत्येक माह एक अर्न्तराष्ट्रीय या राष्ट्रीय दिवसों का आयोजन करना।
- ❖ गम्भीर गर्भवती महिलाओं को चिन्हित करना एवं बच्चों तथा महिलाओं को नजदीकी अस्पताल पी.एच.सी. या सी.एच.सी. या सब–सेन्टर पर रेफर करना।
- ❖ स्वास्थ्य कार्यकर्त्ता द्वारा गाँव मे होम विजीट कर मरीजों का फॉलोअप करना तथा कार्यक्रम के डॉक्टर के साथ सम्पर्क कर उचित सलाह देना।
- ❖ परियोजना अधिकारी द्वारा स्वास्थ्य कार्यकर्ता के साथ गांव मे भ्रमण करना तथा गर्भवती, धात्री महिलाओं तथा गांववासियों से वार्तालाप कर कार्यक्रम की समीक्षा करना तथा मॉनिटरिंग व मूल्यांकन करना तथा टीम को सहयोग प्रदान करना।
- ❖ टीकाकरण के दिन आंगनबांड़ी केन्द्र पर जाना तथा गाँव की गर्भवतियों तथा महिलाओं को टीकाकरण के प्रति जागरूक कर टीकाकरण मे सहयोग करना।

गतिविधियाँ एवं उपलब्धियाँ :–

निःशुल्क स्वास्थ्य सेवायें :– कार्यक्रम के तहत स्वास्थ्य एवं चिकित्सा सुविधायें अजमेर जिले की श्रीनगर, सिलोरा तथा पीसांगन पंचायत समिति के 20 गाँवो में प्रदान की जा रही है। कार्यक्रम के तहत मुख्य ध्यान महिलाओं तथा बच्चों पर केन्द्रित किया जाता है। प्रत्येक गाँव में एक स्वास्थ्य कार्यकर्त्ता नियुक्त किया गया है जो टीम के गाँव में पहुँचने से पहले ही सूचना कर देता है। टीम गाँव में पहुँचकर निःशुल्क स्वास्थ्य शिविर का आयोजन करती है। इसके साथ ही जागरुकता बैठकों का आयोजन भी किया जाता है। एम्बुलेंस टीम के साथ गाँव मे पहुँचकर हॉर्न

बजाती है जिससे ग्रामवासियों को सूचना मिल जाती है। स्वास्थ्य टीम द्वारा गृह भ्रमण कर धात्री महिलाओं तथा नवजात शिशु की स्वास्थ्य जाँच, देखभाल, स्तनपान का तरीका व टीकाकरण हेतु प्रेरित, टाँको की देखभाल, जन्म प्रमाणपत्र, स्वच्छता, उपचार आदि सेवायें प्रदान की जाती है। परियोजना के तहत इस वर्ष 24448 मरिजों को निःशुल्क स्वास्थ्य एवं चिकित्सा सेवायें प्रदान की गई।

वर्ष	महिला	पुरुष	बच्चे	कुल
2014—15	9148	5789	2443	17380
2015—16	12563	1817	4182	18562
2016—17	11543	2119	3853	17575
2017—18	11879	1259	3593	16736
2018—19	11823	1338	3681	16842
2019—20	10912	3144	1793	15849
2020—21	15884	1495	5146	22525
2021—22	17412	1579	5457	24448
कुल	**101164**	**18600**	**30153**	**149917**

स्वास्थ्य शिविर में महिलाओं और बच्चों से सम्बन्धित सभी प्रकार की बिमारियों का उपचार किया जाता है। कई बार उपचार से आराम नहीं मिलने पर या गंभीर परिस्थितियाँ होने पर जाँच हेतु मरिजों को किशनगढ़, श्रीनगर तथा अजमेर के अस्पतालों में रेफर भी किया जाता है।

कार्यक्रम का स्टेशनरी हेल्थ सेन्टर—बूबानी में स्थित है जहाँ से कार्यक्रम का संचालन किया जाता है। बूबानी से प्रातः 9:00 बजे एम्बुलेंस गाँव में स्वास्थ्य शिविर लगाने के लिये रवाना होती है। 09:00 बजे से शाम 4:00 बजे तक गाँवों में स्वास्थ्य शिविर लगाया जाता है। शाम 4:00 बजे तक बूबानी में स्वास्थ्य टीम पहुँचती है और 5:00 बजे तक स्टेशनरी हेल्थ सेन्टर, बूबानी पर स्वास्थ्य सेवायें प्रदान की जाती है।

टीम के द्वारा प्रत्येक मरीज का पूरा रिकॉर्ड ओ.पी.डी. रजिस्टर में रखा जाता हैं। उसी रिकॉर्ड के आधार पर मासिक रिर्पोट बनाई जाती है। उनकी प्रत्येक विजिट में वजन, बी.पी. जाँच, सोनोग्राफी आदि की जाँच की जाती है। प्रत्येक विजिट में संस्थागत प्रसव के लिए प्रेरित किया जाता है। 104 व 108 की सुविधाओं की सम्पूर्ण जानकारी दी जाती है। बच्चा होने पर टीम द्वारा धात्री महिला के घर जाकर पीएनसी विजिट की जाती है। महिला को स्वयं तथा अपने बच्चे की देखभाल प्रक्रिया तथा सावधानियों के प्रति जागरुक किया जाता है। बच्चे को नहलाना, मालिश करना, स्तनपान से लेकर सम्पूर्ण टीकाकरण करवाने, लगवाने के लिये प्रेरित किया जाता है। माँ को स्वयं के आहार के प्रति जागरुक भी किया जाता है।

गर्भवती एवं धात्री महिला जाँच :- कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य ग्रामीण महिलाओं को स्वास्थ्य सुविधायें प्रदान करना है। विशेषतः प्रत्येक गर्भवती महिला को स्वास्थ्य लाभ पहुँचाना है। हमारा लक्ष्य मातृ मृत्युदर को कम करना है इसलिये टीम गर्भवती तथा धात्री महिलाओं पर विशेष ध्यान केन्द्रित करती है। टीम वर्तमान के श्रीनगर, सिलोरा तथा पीसांगन क्षेत्र के 20 गाँवों में कार्य कर रही है। प्रत्येक गाँववासी को कार्यक्रम की सुविधाओं की जानकारी है।

स्वास्थ्य कार्यकर्त्ता की भी गाँव में अच्छी पहचान बन चुकी है। गाँव में अगर किसी महिला को कोई तकलीफ होती है तो वह स्वास्थ्य कार्यकर्त्ता से तुरंत सम्पर्क करती है। महिला को गर्भ से होने का अंदेशा होने पर स्वास्थ्य टीम या आंगनबाडी केन्द्र पर जाँच करवाकर पुष्टि कर लेती है। गर्भवती महिला के प्रथम बार स्वास्थ्य शिविर में पहुँचने पर उसका रजिस्ट्रेशन किया जाता है उसके बाद लगातार शिविर में पहुँचकर स्वास्थ्य जाँच करवाने के लिए प्रेरित किया जाता है। इसके साथ ही स्वास्थ्य कार्यकर्त्ता द्वारा स्वास्थ्य शिविर के बाद लगातार गृह भ्रमण कर स्वास्थ्य स्थिति की जानकारी प्राप्त की जाती है। इसके साथ उनकी काउन्सिलिंग की जाती है, जिसमें पोषाहार, स्वच्छता, दैनिक दिनचर्या, आराम, जननी सुरक्षा योजना तथा खून की जाँच आदि के लिए प्रेरित किया जाता है और उनसे संस्थागत प्रसव, टीकाकरण माँ का पहला दूध आदि बिन्दुओं पर भी चर्चा की जाती है। परियोजना के द्वारा इस वर्ष में 422 गर्भवती महिलाओं का पंजीकरण कर स्वास्थ्य सुविधायें प्रदान की गयी। इन पंजीकृत गर्भवती महिलाओं को बच्चा होने तक स्वास्थ्य जाँच एवं उपचार की सुविधा प्रदान की गयी। टीम द्वारा इन 422 पंजीकृत गर्भवती महिलाओं को 3336 बार स्वास्थ्य जाँच एवं उपचार दिया गया। प्रत्येक विजिट पर उन्हें लगातार वजन बढाने, पोषाहार, स्वच्छता, आराम, संस्थागत प्रसव तथा माँ का पहला दूध पिलाने के लिए जागरुक किया जाता है। साथ ही बेटा–बेटी मे अंतर न करके बेटी को भी समान अवसर प्रदान करने के लिए प्रेरित किया जाता है। बेटी को भी उच्च शिक्षा प्राप्त करने का अवसर देना चाहिये। उसे ही बेटा समझना चाहिए। प्रसव होने पर टीम द्वारा महिला के घर मातृ एवं शिशु देखभाल हेतु भ्रमण किया जाता है। बच्चे एवं माँ को बच्चे के सम्पूर्ण टीकाकरण, स्तनपान, स्वच्छता, पोषाहार, जन्म प्रमाण पत्र के साथ विभिन्न सरकारी योजनाओं की जानकारी दी जाती है। इस वर्ष में टीम द्वारा 311 धात्री महिलाओं का उपचार, परामर्श एवं स्वास्थ्य देखभाल की गयी।

टीकाकरण :– स्वास्थ्य टीम गाँव में स्वास्थ्य सेवायें तथा चिकित्सा सेवायें प्रदान करती है। सम्पूर्ण टीकाकरण बच्चों के बेहतर तथा सुरक्षित भविष्य के लिये आवश्यक है। यह टीकाकरण बच्चों को सात बिमारियाँ जैसे – क्षय रोग, डिप्थीरिया, काली खाँसी, खसरा, टिटनेस, हेपेटाईटिस बी तथा चिकन पॉक्स आदि से बचाते है। इसके साथ ही बच्चों को पोलियो की दवा भी पिलाई जाती है। आंगनबाड़ी केन्द्र पर कार्यरत आशा सहयोगिनी तथा टीम का स्वास्थ्य कार्यकर्त्ता टीकाकरण से पूर्व गाँववासियों को सूचना प्रदान करता है। टीकाकरण के दिन आंगनबाड़ी केन्द्र पर टीकाकरण में सहयोग किया जाता है। टीकाकरण के दिन गर्भवती महिलाओं तथा बच्चों को टीके लगाये जाते है। जिसका रिकॉर्ड स्वास्थ्य कार्यकर्त्ता तथा आंगनबाड़ी कार्यकर्ता द्वारा रखा जाता है। इस वर्ष में 20 गाँवों में टीम के सहयोग से आंगनबाड़ी केन्द्रों पर टीकाकरण किया गया। जिसकी रिर्पोट है – 215 बी.सी.जी., 283 पेन्टा प्रथम, 297 पेन्टा द्वित्तीय, 342 पेन्टा त्तीय, 342 आईपीवी, 318 खसरा, 181 डीपीटी बुस्टर प्रथम, 12 डीपीटी बुस्टर द्वित्तीय तथा गर्भवती को 408 टीटी लगाये गये। टीम द्वारा प्रत्येक गाँव से प्रत्येक माह में रिकॉर्ड प्राप्त किये जाते है और मासिक रिकॉर्ड में दर्ज कर संस्थान तथा टी.एच.एफ. को प्रदान किये जाते है।

टीम द्वारा उन महिलाओं के घर भ्रमण कर टीकाकरण के लिए प्रेरित किया जाता है जो टीके नहीं लगवाते हैं, उन्हें टीकाकरण हेतु प्रेरित कर टीकाकरण करवाया जाता है। टीम द्वारा नवम्बर माह में विश्व टीकाकरण दिवस भी मनाया जाता है। इस दिवस पर जागरुकता बैठकों का आयोजन किया जाता है। इन बैठकों के माध्यम से ग्रामवासियों को सम्पूर्ण टीकाकरण करवाने हेतु काउन्सिलिंग की जाती है। टीम के सहयोग से इस वर्ष मे कुल 2398 बच्चों का टीकाकरण करवाया गया। बच्चों तथा गर्भवती महिलाओं के टीकाकरण के साथ–साथ कोरोना का टीका लगवाने के लिए भी गाँववासियों को प्रेरित किया जाता है। उनकी भ्रान्तियों को दूर कर उन्हें टीकाकरण करवाने के लिए जागरुक किया जाता है।

मातृ मृत्युदर एवं शिशु मृत्युदर :– कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य गर्भवती महिलाओं को जागरुक कर नियमित जाँच तथा उपचार के माध्यम से संस्थागत प्रसव के फायदे बताना है। कार्यक्रम के विभिन्न आयाम हैं जिसका उद्देश्य ग्रामवासियों को उनके उद्देश्य के प्रति जागरुक करना है। विशेषतः महिला स्वास्थ्य का मुद्दा है। टीम द्वारा जागरुकता बैठकों के माध्यम से स्वास्थ्य संबंधी विभिन्न मुद्दों पर चर्चा की जाती है। महिलाओं को वर्तमान के

परिपेक्ष में छोटा परिवार–सुखी परिवार के लिए प्रेरित किया जाता है। गर्भावस्था के दौरान पोषाहार, दैनिक दिनचर्या, दिन के समय आराम, नियमित जाँच, वजन, बी.पी., खून की जाँच, टीकाकरण, सोनोग्राफी के साथ–साथ लगातार उपचार की सलाह दी गयी ताकि मातृ मृत्युदर को कम किया जा सके। शिशु मृत्युदर को कम करने के लिए जागरुकता बैठकों में स्तनपान का तरीका, स्वच्छता, माँ का पहला दूध आदि के प्रति गर्भावस्था में जागरुक किया जाता है तथा उसके बाद पी.एन.सी. विजीट पर भी प्रेरित किया जाता है ताकि शिशु मृत्युदर को कम किया जा सके। टीम द्वारा 20 गाँवों मे स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया जाता है। वर्षभर में कार्यक्षेत्र के 20 गाँवों में एक भी मातृ मृत्यु नहीं हुई। वर्ष भर में 311 बच्चों का जन्म हुआ जिसमें से 8 बच्चों की मृत्यु हुई है। जो पिछले वर्ष की मृत्युदर से काफी कम है। टीम द्वारा समय–समय पर विभिन्न मुद्दों पर जागरुकता बैठकों का आयोजन किया जाता है।

संस्थागत प्रसव :– कार्यक्रम का उद्देश्य ही गर्भवती महिलाओं का नियमित उपचार कर संस्थागत प्रसव करवाना है। जागरुकता बैठकों के आयोजन के द्वारा महिलाओं को संस्थागत प्रसव, जननी सुरक्षा योजना, 104 व 108 की सुविधाओं आदि के साथ–साथ माँ व बच्चे की सुरक्षा तथा उपयोगिता के प्रति सचेत किया। स्वास्थ्य कार्यकर्त्ता द्वारा सरकारी अस्पताल में प्रसव करवाने के बाद मिलने वाले लाभ की जानकारी गृह परिवारों को दी गयी। महिला के साथ–साथ उनके परिवारों को भी संस्थागत प्रसव हेतु प्रोत्साहित किया गया। कार्यक्रम के द्वारा 20 गांवों में इस वर्ष 274 प्रसव सरकारी अस्पताल में, 31 प्रसव निजी अस्पताल मे तथा 6 प्रसव घर पर हुये। इस वर्ष भर में कुल 311 प्रसव हुये।

जागरुकता :– कार्यक्रम में स्वास्थ्य शिविर तथा जागरुकता बैठकों का नियमित रुप से आयोजन किया जाता है। टीम के द्वारा महिलाओं, किशोर–किशोरी, बालक–बालिकाओं तथा ग्राम स्वास्थ्य कमेटी के सदस्यों के साथ जागरुकता बैठकों का आयोजन किया जाता है। इन जागरुकता बैठकों में स्वास्थ्य सम्बन्धित विभिन्न मुद्दों तथा बिमारियों पर चर्चा की जाती है और जागरुक किया जाता है। इसके साथ ही माह में एक बार एक राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय दिवस भी मनाया जाता है। इस तरह वर्ष भर में 18 राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय दिवसों का आयोजन किया जाता है। इस वर्ष टीम द्वारा महिलाओं की 20 जागरुकता बैठकों का आयोजन किया गया। जिसमे 4688 महिलाओं को जागरुक किया गया। किशोर–किशोरी के साथ 16 जागरुकता बैठकों का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के पिछले वर्ष तक किशोरी जागरुकता बैठकों का आयोजन किया जाता था लेकिन इस वर्ष से किशोर–किशोरी जागरुकता बैठकों का आयोजन किया गया। इन जागरुकता बैठकों मे किशोर–किशोरी के स्वास्थ्य स्थिति, शारीरिक बदलाव, देखभाल व सावधानियाँ आदि पर भी चर्चा की गयी तथा छेडछाड के प्रति सचेत किया गया। कार्यक्रम में ग्रामवासियों का उच्चतर सहयोग प्राप्त करने के उद्देश्य से प्रत्येक गाँव में ग्राम स्तर पर एक ग्राम स्वास्थ्य कमेटी का गठन किया गया है। इनके साथ भी माह मे एक बार जागरुकता बैठक का आयोजन कर विभिन्न मुद्दों पर चर्चा की जाती है। ग्राम स्वास्थ्य कमेटी की 20 जागरुकता बैठकों के द्वारा 2693 सदस्यों को जागरुक किया गया। समय–समय पर जागरुकता बैठकों के साथ–साथ रैलियों का आयोजन भी किया जाता है।

परिवार नियोजन :– कार्यक्रम के द्वारा स्वास्थ्य सेवाओं के अलावा जागरुकता कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। इन जागरुकता कार्यक्रमों में स्वास्थ्य सम्बन्धित विभिन्न मुद्दों पर चर्चा की जाती है। टीम के द्वारा परिवार नियोजन की भी जागरुकता बैठकों में चर्चा की जाती है। महिलाओं तथा उनके परिवार को छोटे परिवार का महत्व समझाया जाता है। आजकल के महंगाई के जमाने में बच्चों को उच्चतर शिक्षा, सक्षम बनाना तथा सशक्त करना बहुत मुश्किल है। बिना किसी कामयाबी के आने वाले समय में जीवन जीना और भी मुश्किल हो जायेगा। जमीने कम पड जायेगी। खाने–पीने की चीजें कम पडेगी। इन बिन्दुओं पर चर्चा कर परिवार नियोजन के साधन जैसे– कण्डोम, गर्भ निरोधक गोलियाँ, महिला नसबंदी, पुरुष नसबंदी, कोपरटी, इंजेक्शन, इत्यादि की विस्तृत जानकारी

दी गई तथा उपयोग में लेने के लिए प्रेरित किया गया।

टीम के द्वारा स्वयं परिवार नियोजन के साधनों को महिलाओं को नहीं दिया जाता है बल्कि स्वास्थ्य कार्यकर्त्ता द्वारा महिलाओं को प्रोत्साहित कर आंगनबाड़ी केन्द्र तक पहुँचाने और वहाँ पर आशा सहयोगिनी की देखरेख में महिलाओं को उचित साधन दिया जाता है तथा जागरुक भी किया जाता है। इसके साथ ही नसबंदी के लिए भी प्रेरित किया जाता है। टीम के द्वारा आशा सहयोगिनी के सहयोग से 53 महिला नसबंदी करवाई गई। 27 महिलाओं ने कॉपरटी रखवायी। 2314 महिलाओं ने कंडोम किया। 418 महिलाओं ने गर्भ निरोधक गोलियाँ तथा 57 महिलाओं ने सरकार द्वारा संचालित अंतरा इंजेक्शन लगवाये। इस प्रकार 2869 परिवार नियोजन साधनों का उपयोग इस वर्ष में किया गया।

रेफरल सेवायें :– कार्यक्रम के तहत स्वास्थ्य शिविर में स्वास्थ्य सेवाएँ निःशुल्क प्रदान की जाती है। स्वास्थ्य शिविर में सामान्यतः बिमारियों का ईलाज किया जाता है। कई बार स्वास्थ्य सेवाओं का फायदा न होने पर, गंभीर समस्या होने पर तथा लैब जाँच हेतु मरिजों को सरकारी व गैर सरकारी अस्पतालों में रेफर किया जाता है।

जाँच करवाकर पुनः स्वास्थ्य शिविर में चेकअप हेतु आने के लिए प्रेरित किया जाता है। स्वास्थ्य कार्यकर्त्ता द्वारा घर भ्रमण कर स्वास्थ्य जानकारी प्राप्त की जाती है। इस वर्ष टीम के द्वारा 194 मरीजों को रेफरल सुविधायें प्रदान की गई। आस–पास के कार्यक्षेत्र में गर्भवती महिला की स्वास्थ्य स्थिति अचानक खराब होने पर उसे इस एम्बुलेंस के द्वारा सरकारी अस्पताल में भी पहुचायाँ जाता है।

गर्भवती व धात्री महिला जाँच

मातृ मृत्युदर को कम करना

शिशु मृत्युदर को कम करना

सम्पूर्ण टीकाकरण

संस्थागत प्रसव के लिए प्रेरित करना

परिवार नियोजन को बढ़ावा देना

जागरूकता फेलाना

टी.एच.एफ. विजीट :– कार्यक्रम का संचालन द् हंस फाउण्डेशन नई दिल्ली के वित्तीय सहयोग से ग्रामीण महिला विकास संस्थान–बूबानी, अजमेर के द्वारा किया जा रहा है। कार्यक्रम का संचालन अजमेर जिले की श्रीनगर, सिलोरा तथा पीसांगन पंचायत समिति के 20 गांवों में किया जा रहा है। हर वर्ष द् हंस फाउण्डेशन–नई दिल्ली के द्वारा कार्यक्रम की गतिविधियों का मूल्यांकन किया जाता है। परन्तु कोरोना महामारी के कारण इस वर्ष विजीट कर्त्ता द्वारा टी.एच.एफ. विजिट ऑन लाईन ही की गई। परियोजना निदेशक शंकरसिंह रावत और परियोजना समन्वयक प्रीति ईनाणी द्वारा संस्थान की गतिविधियों व कार्यक्रम की सम्पूर्ण गतिविधियों की विस्तृत जानकारी ऑन लाईन प्रदान की गयी और कार्यक्रम संचालन की रूप रेखा को समझाया गया।

सहयोगी संस्थायें

एच.एल.एल. लाईफकेयर लिमिटेड :– कार्यक्रम के साथ एच.एल.एल. लाईफ केयर लिमिटेड संस्था भी जुडी हुई है। यह संस्थान पिछले काफी वर्षों से कार्यक्रम को सहयोग प्रदान कर रही है। एच.एल.एल. लाईफकेयर लिमिटेड संस्थान को सस्ती दरों पर सेनेटरी नेपकीन की सुविधा उपलब्ध करवाता है। कार्यक्रम द्वारा एच.एल.एल. लाईफकेयर लिमिटेड से सस्ती दरों पर सेनेटरी नेपकिन खरीदे जाते है और सस्ती दरों पर गांव की महिलाओं को प्रदान किये जाते है। टीम के जागरुकता बैठकों के माध्यम से महिलाओं तथा बालिकाओं के साथ सेनेटरी नेपकिन

के उपयोग पर चर्चा की जाती है। विभिन्न बिमारियों के बचाव को ध्यान में रखते हुये इसके उपयोग पर जोर दिया गया। टीम के द्वारा इस वर्ष 2981 सेनेटरी नेपकिन का वितरण किया गया। कार्यक्रम के तहत एक सेनेटरी नेपकिन का पैकेट 30/– रुपये में दिया जाता है। जिसमे 6 सेनेटरी नेपकिन होते है। यह मार्केट में उपलब्ध सेनेटरी नेपकिन से सस्ते हैं।

मिनाक्षी मिशन हॉस्पीटल व रिसर्च सेन्टर :- कार्यक्रम का संचालन मई, 2014 से किया जा रहा है। स्वास्थ्य शिविरों तथा जागरुकता अभियानों के माध्यम से लगातार सेवायें प्रदान की जा रही है। इन्हीं वर्षो के दौरान वर्ष 2015–16 से कार्यक्रम को मिनाक्षी मिशन हॉस्पिटल एवं रिसर्च सेन्टर का सहयोग प्राप्त हुआ। मिनाक्षी फाउण्डेशन के द्वारा कार्यक्रम को महिलाओं व बच्चों के लिए निःशुल्क दवाएँ उपलब्ध करवायी जाती है। संस्थान को दो प्रकार की दवाइयाँ उपलब्ध करवाई जाती है। फाउण्डेशन द्वारा एक सेवायें गर्भवती तथा धात्री महिलाओं को विटामिन एन्जेल नामक मल्टीविटामिन गोलियाँ है। इसका एक कोर्स पूरे छः माह तक होता है। रोज रात को एक गोली लेनी होती है। दवा पूरे छः माह तक चलती है। एच.एम.एम.एस. कार्यक्रम में पंजीकृत होते ही टीम द्वारा गर्भवती महिला को यह दवा दी जाती है और वह छः माह तक इसका सेवन करती है। साथ ही धात्री महिलाओं तथा एनिमिया से ग्रसित लोगो को भी यह दवा दी जाती है। टीम के द्वारा महिलाओं को पूरा कोर्स लेने के लिए प्रेरित किया जाता है। टीम के द्वारा 1116 महिलाओं को विटामिन एन्जेल का वितरण किया गया। इसके साथ ही मिनाक्षी फाउण्डेशन द्वारा बच्चों के लिए कृमिनाशक दवा तथा विटामिन ए की दवा उपलब्ध करवायी जाती है। कार्यक्रम का संचालन 20 गाँवों में किया जाता है। कार्यक्रम के तहत इन 20 गाँवों के बच्चों को कृमिनाशक तथा विटामिन ए की खुराक पिलायी जाती है। यह दवा 6 माह से 5 वर्ष के बच्चों को दी जाती है। विटामिन ए की खुराक आँखों की रोशनी तथा रोग प्रतिरोधक क्षमता मजबूत करने के लिए 6 माह से 5 वर्ष के बच्चों को पिलायी जाती है।

प्रत्येक 6 माह से यह खुराक तथा गोली दी जाती है। टीम के द्वारा इस वर्ष में 930 बच्चों को विटामिन ए तथा कृमिनाशक दवा की खुराक पिलायी गई। खुराक पिलाने के साथ ही महिलाओं को जानकारी दी जाती है और 6 माह बाद फिर से पिलाने के लिये प्रेरित किया गया।

राही ट्रकर्स आई हेल्थ कार्यक्रम (साईट सेवर्स)

Raahi Truckers Eye Health Program (Sight Savers)

साईट सेवर्स, नई दिल्ली व रेबन के वित्तीय व तकनीकी सहयोग से ग्रामीण महिला विकास संस्थान ने जून 2018 से राही ट्रकर्स आई हेल्थ कार्यक्रम शुरू किया गया। राही राष्ट्रीय ट्रकर्स आई हेल्थ कार्यक्रम के तहत जून 2018 से सभी ट्रक ड्राईवरों व क्लिनर की निःशुल्क आँखो की जाँच व चश्मे वितरण किये जा रहे है। साथ ही जयपुर से ब्यावर व मकराना से गुलाबपुरा नेशनल हाईवे पर लगभग 500 Km तक एक माह में 3 से 4 नेत्र जाँच शिविर आयोजन किया जाता है। जिसमें आँखों की जाँच के साथ ही ब्लड शुगर, रक्तचाप, वजन ऊँचाई का मापन आदि मापने के कार्य किये जाते है। फिर उन्हें विजन टेक्निशियन के पास आँखों की स्क्रनिंग के लिए भेजा जाता है। वहाँ से उन्हें अलग अलग ग्रेड मिलती है। जिस आधार पर ऑपटोमेट्रिस्ट उनकी आँखों की जॉच करता है। यदि उन्हें चश्में की आवश्यकता होती है तो ही वह उन्हें चश्मा वितरण के लिए कहता है। साथ ही टीम द्वारा सभी ड्राईवरों को स्वास्थ्य शिक्षा व आर्थिक स्थिति के बारे में विस्तार से समझाया जाता है। सभी ट्रक ड्राईवरों को यह भी बताया जाता है कि प्रत्येक 6 माह में अपनी आँखों की जाँच करवाना अनिवार्य है। उन्हें पौष्टिक आहार व ऑखों की सही देखभाल के लिए प्रेरित किया जाता है।

इस कार्यक्रम में जून 2018 से 30 अप्रेल 2022 तक 24095 ट्रक ड्राईवर व क्लीनर लाभान्वित हो चुके है। जिसमें 11765 चश्में वितरीत हो चुके है।

01.04.2021 से 31.03.2022 तक का डाटा इस प्रकार है–

कुल OPD – 6787, कुल चश्में – 3164

पृष्ठभूमि – ट्रक ड्राइवरों के समुदाय के लिये देश के सबसे बड़े नेत्र स्वास्थ्य कार्यक्रमों में से एक कार्यक्रम है। राही ट्रकर्स आई हेल्थ कार्यक्रम जो मई 2019 तक सुचारू रूप से चलने के बाद वर्ष 2019 से अब तक चल रहा है। इस कार्यक्रम के प्रारम्भ में सारे कार्यकर्त्ताओं को टेबलेट व पोर्टल को चलाने हेतु प्रशिक्षण दिया गया और उसके बाद दिनांक 21 जून 2018 को कार्यक्रम का उद्‌घाटन किया गया। जिसमें साईट सेवर्स से श्री अमरेश पाण्डे, श्री शेलेन्द्र व सुश्री वरिधि सिंह भी उपस्थित थे। श्री शेलेन्द्र सर के द्वारा उपस्थित सभी कार्यकर्त्ताओं को टेबलेट की समस्त डाटा एन्ट्री जैसे विभिन्न होटल व साईट सेवर्स के लामाना सेन्टर (राही दृष्टि केन्द्र) पर आये ड्राईवरों व क्लीनरों का बेसिक विवरण भरना, साईट सेवर्स के पेल्यूसिड पोर्टल पर क्यू आर कोड जनरेट करना, केम्प जनरेट करना तथा चश्मों के आर्डर व उनकी डिलीवरी दिखाना आदि के बारे में जानकारी दी। सभी गतिविधियों का प्रशिक्षण पाने के बाद दिनांक 22.06.2018 को पहला केम्प विजन सेन्टर लामाना में रखा गया और उसके बाद से ही कार्यक्रम निरन्तर प्रगति कर रहा है तथा ज्यादा से ज्यादा ट्रक ड्राइवरों व क्लीनरों को कार्यक्रम के तहत लाभ प्रदान किया जा रहा है। मार्च 2019 में एक वर्ष सफलता पूर्वक पूरा करने के बाद इस कार्यक्रम को मई 2019 में विजन सेन्टर किशनगढ़ में स्थानान्तरित कर दिया गया क्योकि यहाँ भीलवाड़ा, ब्यावर व पंजाब तीनों रूट के सारे ट्रक ड्राईवर आते हैं व यहाँ से चश्में डिलीवर करना भी आसान हो जाता है।

साईट सेवर्स के वित्तीय सहयोग से जो विजन सेन्टर वर्ष 2018 में खोला गया था वह लामाना में एन.एच. रोड से 100 मीटर की दूरी पर बना हुआ था। अब वर्ष 2019 में यह विजन सेन्टर किशनगढ़ में देव मार्केट, मकराना राज होटल के सामने, तोलामाल में स्थानान्तरित कर दिया है। इस कार्यक्रम में 5 कार्यकर्त्ताओं की टीम है। एक ओप्टोमेट्रिस्ट, दो सामुदायिक स्वास्थ्य कार्यकर्त्ता एक सहायक ऑप्टोमेट्रिस्ट व एक लेखाकार है। विजिन सेन्टर में प्रथम टेबल पर ट्रक ड्राईवरों व क्लीनरों का रजिस्ट्रेशन किया जाता है, दूसरी टेबल पर स्क्रीनिंग टेस्ट व तृतीय टेबल पर ऑप्टोमेट्रिस्ट होता है। सब से पहले कम्यूनिटी हेल्थ वर्कर होटल पर आये हुए ड्राइवरों से बात कर उन्हें

आँखों की जाँच करवाने हेतु प्रेरित करता है और उन्हें सेन्टर पर भेजता है टेबल न. 1 पर ट्रक ड्राइवरों को बैठा कर उनका आई कार्ड बनाया जाता है व उनसे ड्राइविंग लाईसेन्स मांगा जाता है। साथ ही अन्य जानकारी जैसे नाम, उम्र, मोबाईल नम्बर, ड्राइविंग लाईसेन्स, रिन्यूवल की दिनांक, वेतन, उनकी गाडी का रूट, जाति, जीवन, मेडिकल व अन्य बीमा है या नहीं, शराब व सिगरेट पीने की आदत, दूर से उन्हें कैसा दिखता है, मेडिकल जाँच करवाते है या नहीं, कभी उनका एक्सीडेन्ट तो नहीं हुआ आदि विभिन्न प्रकार की जानकारी लेते है। उसके बाद टेबल नम्बर 2 पर उनकी आँखों की जाँच की जाती है और उसके बाद उनको ग्रेड दी जाती है। यदि ग्रेड ए मिली होती है तो ड्राईवर पुनः 1 नम्बर टेबल पर जाता है और यदि अन्य ग्रेड मिली होती है तो 3 नम्बर टेबल पर जाता है और उसे कौन से नम्बर का चश्मा लगेगा यह जाँच किया जाता है। यदि उसे पास की नज़र की परेशानी होती है तो उसे उसी वक्त चश्मा दे दिया जाता है और यदि दूर का या बाय फोकल आता है तो उस चश्में का आर्डर दिया जाता है जो कि टेबल नम्बर 1 पर होता है।

उद्देश्य–

1. ट्रकर्स को प्राईमेरी आई केयर सर्विसेज उपलब्ध करवाना जिनको जाँच व रिफ्रेक्शन की जरूरत हैं उन्हें इस कार्यक्रम के द्वारा मदद करना।
2. आँखों के स्वास्थ्य की महत्वता को ध्यान में रखकर लोगों को जागरूक करना।
3. तकनीकी की मदद से सारे ट्रक ड्राईवरों का डाटा एकत्रित करना।
4. राही ट्रकर्स आई हेल्थ कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य कार्यक्रम के नाम से ही स्पष्ट है। इसका मुख्य उद्देश्य ट्रक ड्राईवर्स, क्लीनर्स की आँखों की जाँच कर उन्हें चश्मा वितरण करना, आँखों को सुरक्षित रखने के लिए समय–समय पर उनकी जाँच करवाना नियमित रुप से आँखो को ठण्डे साफ जल से धोना चाहिए व अन्य जानकारी उपलब्ध करवाना जिससे वे अपनी आँखों का बेहतर तरीके से ध्यान रख सके।
5. आँखों की देखभाल करने के साथ–साथ अपनी व अपने परिवार की सम्पूर्ण सेहत का ध्यान रखने के लिए प्रेरित करना है। सड़क दुर्घटनाओं को कम करना।
6. समय न मिल पाने के कारण जो ट्रक ड्राईवर व क्लीनर आँखो की जाँच नहीं करवा पाते है उन्हें उनके रास्ते में ही आँखो की जाँच का केन्द्र उपलब्ध करवाना।
7. ट्रक ड्राईवरों व क्लीनरों को उनके स्वास्थ्य व बेहतरीन जीवन जीने के लिए प्रेरित करना।
8. ट्रक ड्राईवर्स तथा उनके परिवार को सुरक्षित भविष्य दिलवाना।
9. ट्रक ड्राईवरों व क्लीनरों को आँखों की जाँच के लिए प्रेरित करना।
10. कम आय के कारण ट्रक ड्राईवर व क्लीनर अपनी आँखों की जाँच नहीं करवा पाते हैं इस समस्या को दूर करने के लिए उन्हें इस कार्यक्रम के माध्यम से उनके कार्यस्थल पर आँखों की जाँच की सेवायें व चश्में आसानी से उपलब्ध करवाना।
11. जानकारी के अभाव में वे अपनी आँखों में जलन होने, पानी आने व अन्य समस्या पर ध्यान न देकर इसे सामान्य समस्या या आँखें की थकावट का कारण समझते हैं ऐसी स्थिति में उन्हें आँखें कमजोर होने व समय के साथ–साथ आँखों की रोशनी कम हो जाती है। इसकी जानकारी देना जिससे वे अपनी समस्या के प्रति जागरुक हो और इस ओर ध्यान दें।

12. उन्हें अपनी सेहत की महत्ता समझाना व बताना की स्वास्थ्य ही मनुष्य के जीवन का सबसे बड़ा धन है। अगर हम शारीरिक रुप से स्वस्थ रहेंगें तो ही मानसिक व अन्य रुप से स्वस्थ व खुश रहेंगें, जिससे हर कार्य अच्छे से कर पाएंगें। अपने जीवन के लक्ष्य प्राप्त करेंगें व अपने परिवार की आर्थिक स्थिति मजबूत कर पाएंगें। अतः स्वस्थ रहना आवश्यक है।

गतिविधियाँ –

1. **एक विजन सेन्टर की स्थापना करना तथा विभिन्न होटलों पर केम्प आर्गेनाइज करना**– प्रशिक्षित ऑपटोमेट्रिस्ट, ऑपथेल्मिक असिस्टेन्ट के द्वारा विभिन्न होटलों पर केम्प आयोजित कर उन ट्रक ड्राईवरों को कवर करना जो की रास्ते से निकल रहे है।

2. **ट्रंकिंग समुदाय के लिए नेत्र स्वास्थ्य शिक्षा**– नेत्र देखभाल से संबन्धित भेद्‌यता और जोखिम को कम करने के लिए दृष्टिकोण, सूचना और कौशल के साथ ट्रक ड्राईवरों के बीच नेत्र स्वास्थ्य की मांग को बढावा देने के लिए ट्रकर्स समुदाय के साथ विभिन्न आईईसी गतिविधियाँ करना।

3. **ट्रक ड्राईवरों व क्लीनरों की आँखों की जाँच**– कार्यक्रम के अन्तर्गत विजन सेन्टर (लामाना), विभिन्न होटल जैसे जगदम्बा, लाडी, राज चिडिया, ट्रांसपोर्ट नगर, एच.पी. गैस प्लांट व बी.पी. गेस प्लांट पर आँखे जाँचने हेतु शिविर आयोजित किया जाता है। जिसमें जून से लेकर मार्च 2019 तक लगभग 3981 ट्रक ड्राइवरों व क्लीनरों की आँखों की जाँच की गई उसके बाद अप्रैल 2019 से मार्च 2020 तक लगभग 6942 ट्रक ड्राइवरों व क्लीनरों की आँखों की जाँच की गई, और गत वर्ष अप्रैल 2020 से मार्च 2021 तक लगभग 5158 ट्रक ड्राइवरों व क्लीनरों की आँखों की जाँच की गई। इस प्रकार कार्यक्रम के प्रारम्भ होने से लेकर मार्च 2021 तक कुल 16081 ट्रक ड्राइवरों व क्लीनरों की आँखों की जाँच की गई।

4. **चश्मों का वितरण**– ट्रक ड्राईवरों व क्लीनरों की आँखों की जाँच करने के बाद यदि उन्हें देखने में परेशानी होती है तो आँखों की जाँच के अनुसार समस्या का पता कर उन्हें पास व दूर के चश्में वितरीत किए जाते है। जिनको पास की नजर में परेशानी होती है उन्हें पास की नजर का चश्मा उसी वक्त दे दिया जाता है और जिन्हें दूर की नजर में परेशानी होती है उनके लिए चश्मा ऑर्डर किया जाता है। जो एक सप्ताह बाद आ जाता है और ट्रक ड्राईवरों के वापस आने पर उन्हें दे दिया जाता है। जून से लेकर माह मार्च 2019 तक 1300 चश्में वितरीत किए गए। अप्रेल 2019 से मार्च 2020 तक 1966 चश्में वितरीत किए गए तथा अप्रेल 2020 से मार्च 2021 तक 2295 चश्में वितरीत किए गए । इस प्रकार कार्यक्रम के प्रारम्भ होने से लेकर मार्च 2021 तक कुल 5561 ट्रक ड्राइवरों व क्लीनरों को चश्में वितरीत किए गए।

5. **जागरूकता फैलाना** – राही ट्रक्र्स आई हेल्थ कार्यक्रम के द्वारा सभी ट्रक ड्राईवरों व क्लीनरों को जीवन बीमा, एक्सीडेण्ट बीमा करवाने के साथ ही समय–समय पर बी.पी., शुगर चेक करवाने, मंथली हेल्थ चेकअप, आँखों की जाँच करवाने, पौष्टिक आहार खाने व काम के साथ–साथ अपनी सेहत को भी महत्वता देनी चाहिए इत्यादि के बारे में जागरूकता फैलायी जाती है।

6. **विश्व दृष्टि दिवस पर स्वास्थ्य केम्प का आयोजन**– विश्व दृष्टि दिवस के अवसर पर राही ट्रक्र्स आई हेल्थ कार्यक्रम तथा हंस मोबाईल मेडिकल सर्विसेज कार्यक्रम के द्वारा नेशनल हाईवे 79 पर रामपुरा गाँव में आई हेल्थ केम्प का आयोजन किए गया जिसमें अन्तर्गत 60 ट्रक ड्राईवरों व क्लीनरों की आँखों की जाँच की गई तथा साथ ही उनके परिवार की स्वास्थ्य जाँच भी की गई जिसके अन्तर्गत 20 ट्रक ड्राईवरों व क्लीनरों को चश्में वितरित किये गये। 64 व्यक्तियों ने स्वास्थ्य लाभ प्राप्त किया तथा 13 गर्भवती महिलाओं ने भी शिविर में स्वास्थ्य जाँच कराई और दवाईयाँ प्राप्त की।

7. प्रचार-प्रसार कर ट्रक ड्राईवरों व क्लीनरों को आँखों की जाँच के लिए प्रेरित करना – राही ट्रकर्स आई हेल्थ कार्यक्रम अन्तर्गत पेम्पलेट बाँट कर व बेनर लगाकर प्रचार–प्रसार किया जाता है तथा ज्यादा से ज्यादा ड्राईवरों को जोड़ने का प्रयास किया जा रहा है।

8. एस.आई.ए.एम. केम्प – राही ट्रकर्स आई हेल्थ कार्यक्रम के अन्तर्गत नेशनल हाईवे 8 पर एस.आई.ए.एम. केम्प का आयोजन किया गया। जिसका मुख्य उद्देश्य "जीवन रक्षा सड़क सुरक्षा" रखा गया। जिसमें जीवन रक्षा व उसके महत्व तथा "सावधानी हटी दुर्घटना घटी" जैसे विषयों पर लोगों को जागरूक किया गया। इसके दो केम्प का आयोजन किया गया। पहला केम्प 4 फरवरी 2021 को गेगल टोल प्लाजा पर आयोजन किया गया जिसमें 62 ट्रक ड्राइवरों तथा क्लीनरों की आँखों की जाँच की गई और 27 ड्राइवरों तथा क्लीनरों को चश्में वितरित किये गये। इसी प्रकार दूसरा केम्प जी.वी.के. टोल प्लाजा पर आयोजन किया गया जिसमें 65 ट्रक ड्राइवरों तथा क्लीनरों की आँखों की जाँच की गई और 8 लोगो को चश्में वितरित किये गये।

9. राही फोटो कॉम्पटीशन – साइट सेवर के द्वारा राही ट्रकर्स आई हेल्थ कार्यक्रम के अन्तर्गत एक ऑल इन्डिया फोटो कॉम्पटीशन का आयोजन किया गया जिसमें इस कार्यक्रम के द्वारा चश्मा प्राप्त करने के बाद ट्रक ड्राइवरों व क्लीनरों की खुशी तथा भावों को फोटो के माध्यम से दर्शाना था। फोटो कॉम्पटीशन की केस स्टडी निम्न है–

केस स्टडी

पृष्ठभूमि – उमराव मल गुर्जर ग्राम तोलामाल के रहने वाले हैं। उनकी उम्र 45 वर्ष है। उनकी पत्नि का नाम रूकमा देवी है जो 42 वर्ष की हैं। उमराव मल के दो बेटे व तीन बेटियाँ हैं। उसके बड़े बेटे का नाम जितेन्द्र गुर्जर है वह आई.टी.आई. कर रहा है। उसके छोटे बेटे का नाम देवनारायण गुर्जर है वह 12वीं कक्षा में पढ़ता है। उसकी दो बेटियों की शादी हो चुकी है और सबसे छोटी बेटी 9वीं कक्षा में पढ़ती है।

कार्यक्रम से जुडाव – उमराव मल गुर्जर एक ट्रक ड्राइवर हैं। लगातार गाड़ी चलाने के कारण उन्हें अपनी स्वास्थ्य जाँच के लिये समय नहीं मिल पाता है। कुछ समय से वे सिर दर्द, आँख में पानी आना, आँखों में दर्द जैसी समस्या से पीड़ित है लेकिन समय न मिलने के कारण वे इन पर ध्यान नहीं दे पा रहे हैं। परिवार वालों के जोर देने पर वे डॉक्टर के पास गये और उन्हें अपनी समस्या बताई।

डॉक्टर ने उनकी जाँच की और उन्हें आँखे चैक करवाने को कहा। उसके बाद एक दिन वे मकराना होटल पर खाना खाने के लिये रूके और वहाँ उनकी मुलाकात राही ट्रकर्स आई हेल्थ प्रोग्राम के स्वास्थ्य कार्यकर्ता से हुई। उमराव मल ने उसे अपनी आँखों की समस्या के विषय में बताया। हेल्थ वर्कर राजवीर सिहं ने उन्हें राही ट्रकर्स आई हेल्थ प्रोग्राम के बारे में बताया और उन्हें विजन सेन्टर पर आकर आँखें चैक करवाने को कहा। उसके बाद उमराव मल विजन सेन्टर पर गये और आँखों की जाँच करवा कर चश्मा प्राप्त किया और अब वे बहुत खुश हैं।

निष्कर्ष– अब उनकी सारी समस्याऐं समाप्त हो गई हैं। अब वे चश्मा पहनकर ही गाड़ी चलाते हैं। एक दिन वे अपना चश्मा घर पर ही भूल गये तो उनकी छोटी बेटी ललिता ने उन्हें चश्मा लाकर दिया जिससे वे बहुत खुश हुए। अब उनका परिवार उनकी ओर से निश्चिन्त है।

उपलब्धियाँ – इस कार्यक्रम के द्वारा विजन सेन्टर व विभिन्न होटलों पर केम्प लगाया जाता है। जिसमें विजन सेन्टर पर प्रति दिन लगभग 12 ट्रक ड्राईवरों व क्लीनरों की तथा होटल पर प्रति दिन लगभग 55 ट्रक ड्राईवरों व क्लीनरों की आँखें जाँच की जाती है। आँखों की जाँच के केम्प राज चिडिया, लाडी, ट्रांसपोर्ट नगर, एच.पी. गैस प्लांट, बी.पी. गैस प्लांट आदि जगहों पर लगाये जाते है। जिनका जून, 2018 से मार्च, 2022 तक का डाटा निम्न प्रकार है–

वर्ष	विजन सेन्टर पर ओपीडी	केम्प पर ओपीडी	कुल ओपीडी	कुल चश्में वितरित
जून 2018 से मार्च 2019	1344	2637	3981	1300
अप्रेल 2019 से मार्च 2020	3636	3306	6942	1966
अप्रेल 2020 से मार्च 2021	3667	1491	5158	2295
अप्रेल 2021 से मार्च 2022	3890	2897	6787	3164
कुल	**12537**	**10331**	**22868**	**8725**

नेत्र वसंत कार्यक्रम
Rural Eye Health Program

पृष्ठ भूमि :– राजस्थान के नागौर जिले में थार का मरूस्थल व मार्बल की बहुत खदाने पायी जाती है। राजस्थान के नागौर जिले के परबतसर, कुचामन, डीडवाना व डेगाना आदि ब्लॉकों में सबसे अधिक मोतियाबिन्द के रोगी पाये जाते हैं। इन सभी ब्लॉकों में कोई भी चैरिटेबल नेत्र चिकित्सालय नहीं है जो कि अच्छी सुविधाओं के साथ ग्रामीणों का ईलाज कर सके। इसी लिये ग्रामीणों को बीकानेर, जयपुर और अजमेर जाना पड़ता है। इन सभी समस्याओं को ध्यान में रखते हुए साईट सेवर संस्था और शंकरा नेत्र चिकित्सालय के सहयोग से ग्रामीण महिला विकास संस्थान के द्वारा इन सभी समस्याओं को ध्यान में रखते हुए नागौर जिले में मोतियाबिन्द को जड़ से मिटाने के लिये "नेत्र–वसंत" कार्यक्रम का संचालन किया जा रहा है।

राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन एवं साईट सेवर संस्था के वित्तीय सहयोग से नागौर जिले में मोतियाबिन्द उन्मूलन के लिए एक रूरल आई प्रोग्राम "नेत्र–वसंत" का संचालन किया जा रहा है। जिसमें ग्रामीण महिला विकास संस्थान के द्वारा नागौर जिले में बनाये गये महिला समुहों, किसान क्लब व किसान उत्पादन संगठन के सदस्यो के साथ मिलकर मोतियाबिन्द उन्मूलन कार्यक्रम किया जायेगा। जिसके अर्न्तगत नागौर जिले की 8 पंचायत समितियों (मकराना, परबतसर, कुचामन, नावां, डीडवाना, रिया बड़ी, मेड़ता व डेगाना आदि) को लाभान्वित किया जा रहा है। इस प्रोग्रम का मुख्य कार्य लोगों को जागरूक करना, उनके नेत्रों की जाँच करना, मोतियाबिन्द के रोगियों को ढूढकर उन्हें नेत्र रोगों के प्रति जागरूक करना आदि है। इसके लिये ग्रामीण महिला विकास के द्वारा नागौर जिले की परबतसर और मकराना पंचायत समिति में मास्टर ट्रेनर प्रशिक्षण कार्यक्रम किया जा रहा है। जिसके अर्न्तगत उन्हें मोतियाबिन्द की जाँच करने के विषय में सामान्य जानकारी दी जायेगी। जिसके माध्यम से नागौर जिले में नेत्र रोगियों की जाँच की जा सके। मास्टर ट्रेनर प्रशिक्षण कार्यक्रम सम्पन्न करवाकर उनके माध्यम से हर गाँव तथा ग्राम पंचायत में सामजिक कार्यकर्त्ता तैयार करके रोगियों को ढूँढकर फिर उनके लिए केम्प लगवाकर उनका ऑपरेशन करवाया जा सके, जिससे की नागौर जिले को मोतियाबिन्द मुक्त बनाया जा सकें। मास्टर ट्रेनरर्स द्वारा मोतियाबिन्द के मरीजों को शंकरा आई हॉस्पिटल के सहयोग से केम्प लगाकर उन रोगियों को बस के माध्यम से जयपुर ले जाया जायेगा और फिर ऑपरेशन करवाकर वापस उनके गाँव तक पहुँचाया जायेगा तथा ऑपरेशन के

बाद उनका फॉलोअप किया जाता है।

इस कार्यक्रम के अर्न्तगत निम्न कार्यो को क्रियान्वित किया जायेगा–

- ग्रामीण क्षेत्र में नेत्र स्वास्थ्य के लिये जागरूकता फैलाना।
- घर–घर जाकर ग्रामीणों के नेत्रों की जाँच करना।
- ग्रामीणों में क्षमतावर्धन करना, जिससे लोगों को नेत्र स्वास्थय के प्रति जागरुक किया जा सके।
- ब्लॉक स्तर पर केम्प लगाकर ग्रामीणों के नेत्रों की जाँच करना।
- शंकरा नेत्र चिकित्सालय द्वारा मोतियाबिन्द रोगियों का निःशुल्क इलाज करना।
- रोगियों का फॉलोअप लेना।

इस कार्यक्रम में समूह, किसान क्लब व सामाजिक कार्यकर्त्ता को प्रशिक्षण देकर मास्टर ट्रेनर बनाया जायेगा। जिसमें आँगनवाड़ी कार्यकर्त्ता, सहयोगिनी, सामुदायिक कार्यकर्त्ता के रूप में प्रशिक्षण दिया जायेगा जिसमें उनको ग्रामीण क्षेत्र के लोगों को नेत्र चिकित्सा के विषय में जागरूक करने इत्यादि कार्य किये जायेंगें।

ट्रकर्स कम्यूनिटी लाइवलीहुड स्ट्रेन्थनिंग कार्यक्रम निम्बाहेडा –चित्तौडगढ
Truckers Community Livelihood Strengthening Project, Nimbahera-Chittorgarh

अरावली व चोला मण्डलम के वित्तीय सहयोग से संचालित ग्रामीण महिला विकास संस्थान द्वारा संचालित प्रोग्राम सक्षम ट्रक चालकों व सहायकों के लिए नेत्र स्वास्थ्य जाँच केन्द्र निम्बाहेडा से शुरूआत की गई इस कार्यक्रम वर्ष 2021–22 मे ट्रक चालकों व सहायको की आँखो की जाँच हेतु 16 केम्प किए गये जिसमें प्रतिदिन एवरेज 60 ओ. पी.डी. की जाँच की गई।

हमारे स्वास्थ्य मित्र द्वारा आसपास ट्रांसपोर्ट में जाकर विजन सेन्टर के बारे में जानकारी दी जाती है सेन्टर में आते ही ड्राईवर को सेनेटाईज किया जाता है, थर्मल स्केनर से तापमान मापा जाता है। ड्राईवर के पास मास्क ना हो तो मास्क उपलब्ध करवाया जाता है।

हाईट व वजन मापा जाता है, ब्लड प्रेशर व शुगर की जाँच की जाती है रजिस्टर में ट्रक चालक के लाईसेन्स के द्वारा जानकारी ली जाती है।

ड्राईवर का फॉर्म भरा जाता है। मशीन द्वारा आँखों की जाँच की जाती है। रिफलेक्शन किया जाता है।

ड्राईवर को नजदीक या दूर से देखने में समस्या होने पर चश्में का नम्बर निकाला जाता है। नेत्र सहायक द्वारा चश्मा वितरण रजिस्टर में एन्ट्री व हस्ताक्षर कराया जाता है व चश्मा वितरण किया जाता है।

खान पान व बेहतर दृष्टि के लिए सुझाव दिए जाते है। साथ ही अपने ट्रक चालकों व सहायको को इस विजन सेन्टर और यहाँ की सुविधाओं के बारे में जानकारी देने का आग्रह किया जाता है।

कार्यक्रम की गतिविधियाँ :–

संस्था द्वारा विजन सेन्टर तथा केम्प पर ड्राइवर व सहायक की आँखों की जाँच की जाती है जिसमें ड्राइवर व

सहायक की आँखों की जाँच करके उनको चश्मा वितरीत किया गया।

1. ट्रक ड्राईवरों व क्लीनरों की आँखों की जाँच– कार्यक्रम के अन्तर्गत दिनांक 01.06.2021 से 31.03.2022 तक विजन सेन्टर पर लगभग 3450 ट्रक ड्राइवरों व क्लीनरों की आँखे जाँची गयी है।

2. चश्मों का वितरण– ट्रक ड्राईवरो व क्लीनरों की आँखों की जाँच करने के बाद यदि उन्हें देखने में परेशानी होती है तो आँखों की जाँच के अनुसार समस्या का पता कर उन्हें पास व दूर के चश्में वितरीत किए गये। जिनको पास की नजर में परेशानी होती है उन्हें पास की नजर का चश्मा उसी वक्त दे दिया जाता था और जिन्हें दूर की नजर में परेशानी होती है उनके लिए चश्मा ऑर्डर किया जाता था। जो एक सप्ताह बाद आ जाता है और ट्रक ड्राईवरों के वापस आने पर उन्हें दे दिया जाता है। इस कार्यक्रम में 1309 चश्मे वितरीत किए गए।

3. जागरूकता फैलाना– ट्रकर्स कम्यूनिटी लाइवलीहुड स्ट्रेन्थनिंग कार्यक्रम के द्वारा सभी ट्रक ड्राईवरों व क्लीनरों के जीवन बीमा, एक्सीडेण्ट बीमा करवाने के साथ ही समय–समय पर बी.पी., शुगर चेक करवाने, मासिक स्वास्थ्य जाँच, आँखों की जाँच करवाने, पोष्टिक आहार खाने व काम के साथ–साथ अपनी सेहत को भी महत्वता देने इत्यादि के बारे में जागरूकता फैलायी गयी।

4. प्रचार-प्रसार कर ट्रक ड्राईवरों व क्लीनरों को आँखों की जाँच करवाने के लिए प्रेरित करना– ट्रकर्स कम्यूनिटी लाइवलीहुड स्ट्रेन्थनिंग कार्यक्रम अन्तर्गत पेम्पलेट बाँट कर व बेनर लगाकर प्रचार–प्रसार किया जाता है तथा ज्यादा से ज्यादा ड्राईवरों को जोडने का प्रयास किया

उपलब्धिया वर्ष 2021–22 में कुल 16 केम्प आयोजित किए गए। जिसमें लगभग 960 ड्राइवर व क्लीनर की आँखो की जाँच की गई।

क्रम सं.	ओ.पी.डी.	लाभार्थि
1	विजन सेन्टर ओ.पी.डी.	3450
2	केम्प ओ.पी.डी.	960
	कुल	4410

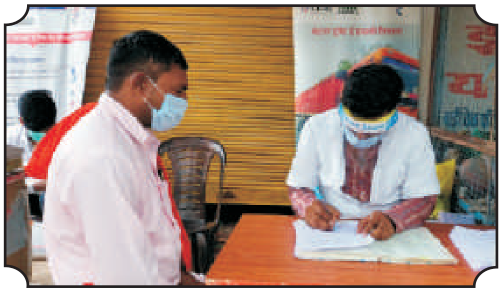

ट्रकर्स कम्यूनिटी लाइवलीहुड स्ट्रेन्थनिंग कार्यक्रम हमीरगढ़-भीलवाड़ा
Truckers Community Livelihood Strengthening Project, Hamirgarh-Bhilwara

कार्यक्रम की पृष्टभूमिः- चोलामण्डलम व अरावली के वित्तीय सहयोग से ग्रामीण महिला विकास संस्थान के द्वारा आयोजित ट्रकर्स कम्यूनिटी लाइवलीहुड स्ट्रेन्थनिंग कार्यक्रम का उद्घाटन 16.06.2019 को भीलवाड़ा व चित्तौड़गढ़ हाइवे 79 पर शुभारम्भ किया। इस अवसर पर संस्थान सचिव शंकरसिंह रावत ने ट्रक, ट्रेलर व बस चालकों के विषय में कहा कि वाहन चालकों को समय–समय पर स्वास्थ्य जाँच करानी चाहिए। ट्रक, ट्रेलर व बस चालकों के सामने चौकन्ना रहना, यातायात नियमों का पालन, भूख–प्यास, समय पर गंतव्य स्थान पहुंचने समेत कई तरह के दबाव होते है। इन सब के बीच संयमित रहकर बिना तनाव के भारी वाहन चलाना किसी चुनौती से कम नहीं है। इन शिविरों के माध्यम से वाहन चालकों को लाभ प्राप्त होगा। इस वर्ष कार्यक्रम के तहत ट्रक चालक के स्वास्थ्य शिविर केम्प किये गये जिसमें 2115 ट्रक ड्राइवरों/क्लीनरों की आँखों व स्वास्थ्य की जाँच कर 982 लोगो को चश्में बाँटे गये।

कार्यक्रम के उद्देश्यः-

1. रोजाना हो रहीं सड़क दुर्घटनाओं को कम करना।
2. समय न मिल पाने के कारण जो ट्रक ड्राईवर व क्लीनर आँखों की जाँच नहीं करवा पाते हैं उन्हें उनके रास्ते में ही आँखों की जाँच के केन्द्र उपलब्ध करवाना।
3. ट्रक ड्राईवरों व क्लीनरों को उनके स्वास्थ्य के प्रति जागरुक करना व बेहतरीन जीवन जीने के लिए प्रेरित करना।
4. ट्रक ड्राईवरों व क्लीनरों को आँखों की जाँच के लिए प्रेरित करना।
5. कम आय के कारण ट्रक ड्राईवर व क्लीनर अपनी आँखों की जाँच नहीं करवा पाते हैं इस समस्या को दूर करने के लिए उन्हें इस कार्यक्रम के माध्यम से उनके कार्यस्थल पर आँखों की जाँच की सेवायें व चश्में आसानी से उपलब्ध करवाना।
6. ट्रक ड्राईवरों व क्लीनरों को अपनी आँखों की जाँच करवाने के साथ–साथ अपने परिवार के सदस्यों को भी उनकी आँखों की देखभाल करने के प्रति जागरुक करने के लिए प्रेरित करना।
7. ट्रक ड्राईवर व क्लीनर आँखों मे जलन होने, पानी आने, कम दिखाई देने आदि समस्याओं पर ध्यान न दे कर जानकारी के अभाव में इन समस्याओं को सामान्य समझ कर ध्यान नहीं देते हैं इसलिए उन्हें उनकी आँखों के प्रति जागरुक करने के लिए आवश्यक जानकारी दी गयी। आँखों की रोशनी कम होने पर ये सभी समस्याएँ होती है व इससे बचाव व उपचार करना आवश्यक है।
8. आँखों से समबन्धित समस्या दूर करने के लिए उन्हें आसान उपाय बताना जैसे– पौष्टिक आहार लेना, समय–समय पर आँखों की जाँच करवाना, कम रोशनी में काम न करना, समय पर सही उपचार लेना आदि जिससे वे अपनी आँखों की देखभाल अच्छे से कर सके।
9. उन्हें स्वस्थ रहने के फायदे बताना तथा आँखों के अतिरिक्त सरकार द्वारा चलाई जा रही अन्य परियोजना के माध्यम से अन्य स्वास्थ्य सम्बन्धित समस्याओं का भी समय पर उपचार करवाने व स्वस्थ रहने के लिए प्रेरित करना।

कार्यक्रम की गतिविधियाँ :-

संस्था द्वारा विजन सेन्टर पर 3297 ड्राइवर व सहायक की आँखों की जाँच की गई तथा दिनांक 24.09.2020 से 22.03.2021 तक केम्प लगाये गये जिसमें 1112 ड्राइवर व सहायक की आँखों की जाँच की गई। इस प्रकार ड्राइवर व सहायक की आँखों की जाँच कर 1309 व्यक्तियों को चश्मा वितरीत किया गया।

1. **ट्रक ड्राईवरों व क्लीनरों की आँखों की जाँच**– कार्यक्रम के अन्तर्गत विभिन्न होटल जैसे नानकपुरा गुरूद्वारा, ग्रीन प्लाजा होटल, लाडी होटल, एच.पी. गैस प्लांट, ए.बी.सी. होटल, भारत गैस प्लांट, इन्डियन गैस प्लांट व बिहारी होटल पर आँखें जाँचने हेतु वर्ष 2021–2022 में तक शिविर आयोजित किये गये है। जिसमें लगभग 2115 ट्रक ड्राइवरो व क्लीनरों की आँखे जाँची गयी है।

2. **चश्मों का वितरण**– ट्रक ड्राईवरो व क्लीनरो की आँखों की जाँच करने के बाद यदि उन्हें देखने में परेशानी होती है तो आँखों की जाँच के अनुसार समस्या का पता कर उन्हें पास व दूर के चश्में वितरीत किए गये। जिनको पास की नजर में परेशानी होती है उन्हें पास की नजर का चश्मा उसी वक्त दे दिया जाता था और जिन्हें दूर की नजर में परेशानी होती है उनके लिए चश्मा ऑर्डर किया जाता था। जो एक सप्ताह बाद आ जाता है और ट्रक ड्राईवरो के वापस आने पर उन्हे दे दिया जाता है। इस कार्यक्रम में 4290 चश्मे वितरीत किए गए।

3. **जागरूकता फैलाना**– ट्रकर्स कम्यूनिटी लाइवलीहुड स्ट्रेंथनिंग कार्यक्रम के द्वारा सभी ट्रक ड्राईवरों व क्लीनरों के जीवन बीमा, एक्सीडेण्ट बीमा करवाने के साथ ही समय–समय पर बी.पी., शुगर चेक करवाने, मासिक स्वास्थ्य जाँच, आँखों की जाँच करवाने, पौष्टिक आहार खाने व काम के साथ–साथ अपनी सेहत को भी महत्वत्ता देने इत्यादि के बारे में जागरूकता फैलायी गयी।

4. **प्रचार-प्रसार कर ट्रक ड्राईवरों व क्लीनरो को आँखों की जाँच के लिए प्रेरित करना**– ट्रकर्स कम्यूनिटी लाइवलीहुड स्ट्रेंथनिंग कार्यक्रम अन्तर्गत पेम्पलेट बाँट कर व बेनर लगाकर प्रचार–प्रसार किया जाता है तथा ज्यादा से ज्यादा ड्राईवरों को जोड़ने का प्रयास किया गया।

उपलब्धियाँ– इस कार्यक्रम के द्वारा वर्ष 2018–19 में कुल 33 केम्प आयोजित किए गए। जिसमें 2500 ड्राईवर व क्लीनर की आँखो की जाँच कर 1249 ड्राईवर व क्लीनर को चश्में वितरीत किये गये तथा वर्ष 2019–20 में कुल 13 नेत्र शिविरों का आयोजन किया गया। जिसमें 1516 ड्राईवर व क्लीनर की आँखों की जाँच कर 750 ड्राईवर व क्लीनर को चश्में वितरीत किये गये। वर्ष 2020–21 मे कुल 24 नेत्र शिविरों का आयोजन किया गया। जिसमें 4409 ड्राईवर व क्लीनर की आँखो की जाँच कर 1309 ड्राईवर व क्लीनर को चश्में वितरीत किये गये तथा वर्ष 2021–22 में कुल 18 केम्प आयोजित किए गए। जिसमें 2115 ड्राईवर व क्लीनर की आँखो की जाँच कर 982 ड्राईवर व क्लीनर को चश्में वितरीत किये गये । जिनका डाटा इस प्रकार है–

क्रम सं.	वर्ष	स्थान	नेत्र जाँच संख्या	वितरीत चश्में
1	2018–19	79 नेशनल हाईवे श्रीनगर से भीलवाड़ा तक	2500	1249
2	2019–20	79 नेशनल हाईवे भीलवाड़ा से चित्तौड़गढ़ तक	1516	750
3	2020–21	79 नेशनल हाईवे श्रीनगर से भीलवाड़ा तक	4409	1309
4	2021–22	79 नेशनल हाईवे भीलवाड़ा से चित्तौड़गढ़ तक	2115	982
		कुल	10540	4290

सक्षम ट्रक चालको एवं सहायको के लिए नेत्र स्वास्थ्य जॉच केन्द्र

अरावली व चौला मण्डलम के वित्तीय सहयोग से ग्रामीण महिला विकास संस्थान द्वारा संचालित प्रोग्राम सक्षम ट्रक चालकों एवं सहायको के लिए नेत्र स्वास्थ्य जॉच केन्द्र इस प्रोग्राम कि शुरूआत 15 अगस्त 2020 में हमीरगढ़ होटल प्यारे पंजाब पर की गई है। इस प्रोग्राम में आज तक 24 मई 2022 तक 10540 पेशेन्ट कि स्क्रीनिंग कि है जिसमें नजदीक व दूर के चश्में 4290 वितरीत किये गये है। ऑफिस का समय सुबह 9:00 बजे से 5:00 बजे तक है। सुबह 9:00 बजे ऑफिस खोलने के बाद साफ–सफाई की जाती है। उसके उपरान्त ऑफिस को सेनेटाईजर किया जाता है। फिर एक आदमी होटल पर जाता है और ट्रक ड्राईवर व क्लीनर को यह बताता है कि हमारे यहॉ ड्राईवर व क्लीनर कि मुफ्त में आँखों का चेकअप किया जाता है और मुफ्त में चश्मा दिया जाता है। तथा बी.पी. व शुगर भी चेक किया जाता है। जैसे ही पेशेन्ट ऑफिस में आता है तो सबसे पहले उसे सेनेटाईज किया जाता है। फिर एक आदमी होटल पर जाता है और ट्रक ड्राईवर व क्लीनर को यह बताता है कि हमारे यहाँ ड्राईवर व क्लीनर कि मुफ्त में ऑखों की जॉच कि जाती है और मुफ्त में चश्मा दिया जाता है तथा बी.पी. व शुगर भी चेक किया जाता है। जैसे ही पेशेन्ट ऑफिस में आता है तो सबसे पहले उसे सेनेटाईजर से हाथ सेनेटाईज किया जाता है। फिर बी. पी. व शुगर की जॉच कि जाती है तथा उनका रजिस्ट्रेशन किया जाता है उसके उपरान्त उनकी नजर कि जॉच कि जाती है तथा उनकी नजर कमजोर होती है और पास की नजर कमजोर होती है तो तुरन्त चश्मा दे दिया जाता है अगर दूर की नजर कमजोर होती है तो उन्हे बता दिया जाता है कि आप का चश्मा बन के आने में 15 से 20 दिन लगेगे आप 15 दिन के बाद कभी भी आओ तो यहॉ से चश्मा ले जाना तथा उन्हे खाने के बारे में भी बताया जाता है कि आपको हरी सब्जियॉ खानी चाहिए तथा 1 दिन में 5–6 बार आँखों को ठण्डे पानी से धोना चाहिए। हमारे यहॉ 1 महिने में 4 दिन केम्प लगाया जाता है और इसमे 60 पेशेन्ट का टारगेट रहता है।

बाजरा प्रसंस्करण एवं मूल्य संवर्धन कार्यक्रम
Millet Processing And Value Addition Cluster, Ajmer

लघु एवं मध्यम उद्योग मंत्रालय भारत सरकार स्फूर्ति प्रोग्राम के अर्न्तगत नोडल एजेन्सी, पी.पी.डी.सी. आगरा, तकनीकी सहयोग तथा निसर्ग संस्थान भोपाल के मार्गदर्शन से ग्रामीण महिला विकास संस्थान द्वारा खायडा किसान समृद्धि प्रोड्युसर कम्पनी लिमिटेड में बाजरा प्रसंस्करण एवं मूल्य संवर्धन प्रोसेसिंग यूनिट लघु एवं मध्यम उद्योग मंत्रालय भारत सरकार के वित्तीय सहयोग से स्थापित की जा रही है। जिसमें कम्पनी से जुड़े किसानों को अपना उत्पादन स्थानीय स्तर पर बिना किसी खर्चे के बिक्री किया जा सकेगा। प्रोसेसिंग यूनिट से स्थानीय कारीगरों को रोजगार उपलब्ध होगा। जिसमें शेयर धारकों को अपनी आय बढ़ाने हेतु अवसर मिला है।

जिसके अंतर्गत निम्न संस्थाओ का सहयोग प्राप्त हुआ हैं –

नोडल एजेंसी : प्रसंस्करण और उत्पाद विकास केंद्र, आगरा (उ.प्र.)

तकनीकी एजेंसी : निसर्ग फाउन्डेशन, भोपाल (म.प्र.)

बोर्ड बैठक –

खायडा किसान समृद्धि प्रोड्युसर कम्पनी लिमिटेड की मासिक बैठक व साप्ताहिक बैठकों का आयोजन किया गया। जिसमें भारत सरकार स्फूर्ति प्रोग्राम के अर्न्तगत दिये गये वित्तिय सहयोग से निर्माण कार्य के निरीक्षण हेतु जिम्मेदारी दी गई तथा निर्माण कार्य को स्फूर्ति के निर्णयानुसार किये जाने हेतु मान्य किया गया।

क्षमता वर्धन बैठक –

बाजरा प्रसंस्करण एवं मूल्य संवर्धन कार्यक्रम के अन्तर्गत भारत सरकार के वित्तिय सहयोग से संचालित प्रोसेसिंग यूनिट से होने वाले लाभ तथा मिलने वाले रोजगार तथा नवीनतम कार्यों के बारे में किसानों का क्षमता वर्धन किया गया। स्फूर्ति योजना के अंतर्गत इकाई के किसानों हेतु जागरूकता एवं क्षमता वर्धन प्रशिक्षणों का आयोजन करके उनको उन्नत कृषि, जैविक कृषि, पशुपालन, बैंकिंग राज्य एवं भारत सरकार की कृषि सम्बंधित योजनाओं की जानकारी एवं सामाजिक सुरक्षा की योजनाओं की जानकारी प्रदान की जाती हैं इसके अंतर्गत 28 जागरूकता प्रशिक्षणों में 894 किसानों को लाभान्वित किया गया।

जागरूकता बैठक –

किसानों को प्रोसेसिंग से होने वाले लाभ तथा किसानों की युनिट में अहम भूमिका के बारे में जागरूक किया गया तथा कम्पनी से जुड़ने हेतु प्ररित किया गया। जागरूकता बैठक विभिन्न गाँवों में की गई। जिसमें स्थानीय स्तर पर उत्पादित फसलों का मूल्य संवर्धन कैसे किया जा सकता है, विषय पर चर्चा के माध्यम से जागरूक किया गया।

भ्रमण का आयोजन –

इकाई के बोर्ड ऑफ डायरेक्टर व जागरूक किसानो (8 सदस्य) हेतु 2 दिवसीय पूर्व में संचालित बाजरा प्रसंस्करण ,वं मूल्य संवर्धन यूनिट के परिचयात्मक भ्रमण के लिए जोधपुर के काजरी में मशीनों की कार्यप्रणाली समझी साथ ही उनके विपणन की विस्तृत जानकारी ली कृषि विज्ञान केंद्र अजमेर में इकाई के 15 किसानों के लिए 1 दिवसीय परिचयात्मक भ्रमण का आयोजन किया गया जिसमे वैज्ञानिकों ने किसानो को अधिक उपज प्राप्त करने के उपाय, मिट्टी प्रशिक्षण, जैविक खेती आदि के बारे में विस्तृत जानकारी दी गई।

ग्वारगम और इसबगोल प्रसंस्करण ईकाई परियोजना
Guargum And Isabgol Processing Cluster, Nagaur

ग्रामीण महिला विकास संस्थान के द्वारा नागौर जिले में गत 12 वर्षों से महिला आजीविका, स्वास्थ्य एवं किसानों के विकास के क्षेत्र में कार्य किये जा रहे हैं, संस्थान द्वारा नाबार्ड के सहयोग से नागौर जिले के रिया बड़ी के ग्राम बासनी जग्गा में एक किसान उत्पादक संगठन "निरंतर एग्रो फूड प्रोड्यूसर कम्पनी लिमिटेड" का गठन 08 मार्च 2016 में किया गया। जिसके अंतर्गत किसानो के हितों में निम्नलिखित उद्देश्य हेतु कार्य किया गया –

- किसानो को जागरूक करना
- किसानों में क्षमता वर्धन करना
- किसानों को कृषि की उन्नत तकनीको को प्रशिक्षण के माध्यम से जानकारी देना
- किसानों को जैविक खेती के लिए प्रेरित करना
- किसानों को उन्नत किस्म की खाद, बीज एवं कीटनाशक उपलब्ध करवाना आदि कार्य करना।

निरंतर एग्रो फूड प्रोड्यूसर कम्पनी लिमिटेड के किसानों के अच्छे प्रयासों के कारण ग्रामीण महिला विकास संस्थान द्वारा भारत सरकार के सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम मंत्रालय के वित्तीय सहयोग से किसानों के परम्परागत

कृषि पद्धति में आज के समय के साथ परिवर्तन करके उनकी आय में वृद्धि हेतु संचालित स्फूर्ति योजना में चयन किया गया। जिसके अंतर्गत निम्न संस्थाओ का सहयोग प्राप्त हुआ हैं –

नोडल एजेंसी : प्रसंस्करण और उत्पाद विकास केंद्र, आगरा (उ.प्र.)

तकनीकी एजेंसी : निसर्ग फाउन्डेशन, भोपाल (म.प्र.)

स्फूर्ति योजना के अंतर्गत ग्रामीण महिला विकास संस्थान के द्वारा कम्पनी क्षेत्र में होने वाली ग्वार व इसबगोल की फसलों के प्रसंस्करण हेतु एक एस.पी.वी (SPV) का निर्माण किया गया जिसका नाम "ग्वारगम और इसबगोल प्रसंस्करण इकाई " रखा गया, जिसका मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित हैं –

- इकाई क्षेत्र के किसानों की ग्वार व इसबगोल की उपज को सही मूल्य पर खरीदना।
- किसानों से खरीदी उपज को प्रसंस्करण करके ग्वार का गम व इसबगोल की भूसी बनाना साथ ही बचे हुए कचरे से पशु आहार का निर्माण करना।
- किसानों के बेहतर लाभ के लिए ब्रांडिंग, पैकिजिंग एवं विपणन करना।
- किसानों को देश के अन्य कृषि आधारित इकाइयों से जोड़ना।
- किसानों को भारत सरकार की अन्य ग्रामीण विकास योजनाओं की विस्तृत जानकारी देना।
- इकाई के व्यवसाय से होने वाले शुद्ध लाभ का 40 प्रतिशत हिस्सा किसानों को हस्तांतरित करना।

इस इकाई के अंतर्गत ग्राम बासनी जग्गा के आस–पास के 15 ग्रामों से लगभग 800 से अधिक किसानो को जोड़ा जा चूका है। इस ग्वारगम और इसबगोल प्रसंस्करण इकाई के अंतर्गत ग्राम बासनी जग्गा में कम्पनी के द्वारा लगभग 3 बीघा भूमि क्रय की हैं, जिसमे की ग्वार व इसबगोल के प्रसंस्करण के लिए 10000 Sq Feet में सामान्य सुविधा केंद्र (CFC) का निर्माण किया जा रहा हैं, जिसमे ग्वार व इसबगोल को प्रसंस्करण के लिए मशीन रखने के साथ उपज का भण्डारण किया जा सके।

बोर्ड ऑफ डायरेक्टर की बैठक : इस ग्वारगम और इसबगोल प्रसंस्करण इकाई के सफल क्रियान्वयन हेतु निरंतर एग्रो फूड प्रोड्यूसर कम्पनी के बोर्ड ऑफ डायरेक्टर की मासिक बैठक में इकाई में होने वाले कार्यों की समीक्षा की जाती हैं, जिसमे भारत सरकार के द्वारा प्राप्त अनुदान राशि का सही तरीके से इस्तेमाल किया जा सके। साथ ही इसमें पारदर्शिता रखी जा सके।

परियोजना क्रियान्वयन समिति की बैठक : भारत सरकार के निर्देशानुसार परियोजना क्रियान्वयन समिति का गठन किया गया हैं , जिसके सदस्य निम्न प्रकार हैं –

क्र.सं.	सदस्य का विवरण	पद	संस्था का नाम
1	भंवरलाल चौधरी	सदस्य	BOD ऑफ Cluster
2	देवकरण उपाध्याय	सदस्य	BOD ऑफ Cluster
3	राजु दास	सदस्य	BOD ऑफ Cluster
4	एलंगो एस.	सदस्य	Rep. ऑफ NA (PPDC, आगरा)
5	मनस्वी मुद्गल	सदस्य	Rep. ऑफ TA (निसर्ग, भोपाल)
6	शंकरसिंह रावत	सदस्य	Rep. ऑफ ग्रामीण महिला विकास संस्थान
7	मनोज छिपा	सदस्य	बैंक ब्रांच मेनेजर (स्टेट बैंक ऑफ इंडिया)

इस परियोजना की क्रियान्वयन समिति की बैठक का आयोजन प्रत्येक माह किया जाता हैं। जिसमे की इकाई के कार्यों के साथ ही आर्थिक लेखे–जोखे पर विचार विमर्श किया जाता है, साथ ही इसके विकास हेतु सुझाव दिये जाते हैं। इस समिति की बैठक का किसी आकस्मिक स्थिति में आयोजन किया जा सकता हैं।

जागरूकता एवं क्षमतावर्धन प्रशिक्षणों का आयोजन – स्फूर्ति योजना के अंतर्गत इकाई के किसानों हेतु जागरूकता एवं क्षमतावर्धन प्रशिक्षणों का आयोजन करके उनको उन्नत कृषि, जैविक कृषि, पशुपालन, बैंकिंग,राज्य एवं भारत सरकार की कृषि सम्बंधित योजनाओं की जानकारी एवं सामाजिक सुरक्षा की योजनाओं की जानकारी प्रदान की जाती हैं। इसके अंतर्गत 26 जागरूकता प्रशिक्षणों में 800 किसानों को लाभान्वित किया। साथ ही 25 क्षमता वर्धन प्रशिक्षणों में 750 किसानों को लाभन्वित किया गया।

परिचयात्मक भ्रमण का आयोजन – इकाई के बोर्ड ऑफ डायरेक्टर व जागरूक किसानो (7 सदस्य) हेतु 2 दिवसीय पूर्व में संचालित ग्वारगम और इसबगोल प्रसंस्करण यूनिट के लिए परिचयात्मक भ्रमण के लिए गुजरात के सिद्धपुर एवं जोधपुर में मशीनों की कार्यप्रणाली समझी। साथ ही उनके विपणन की विस्तृत जानकारी ली। कृषि विज्ञान केंद्र नागौर में इकाई के 15 किसानो के लिए 1 दिवसीय परिचयात्मक भ्रमण का आयोजन किया गया जिसमे वैज्ञानिको ने किसानों को अधिक उपज प्राप्त करने के उपाय, मिट्टी प्रशिक्षण, जैविक खेती आदि के बारे में विस्तृत जानकारी दी गई।

सामाजिक कार्यो का आयोजन – ग्वारगम और इसबगोल प्रसंस्करण इकाई के द्वारा समय–समय पर इकाई क्षेत्र में सामजिक विकास हेतु कार्य किये जाते हैं, जिससे की किसानो के साथ उनके परिवारों से भी जुड़ा जा सके। इकाई के द्वारा निम्न सामाजिक पर्वों पर कार्य किये गये –

- विश्व पर्यावरण दिवस पर पौधारोपण का कार्य।
- कोरोना महामारी से पीड़ित गरीब किसानो को खाद्य सामग्री का वितरण।
- मकर संक्रांति पर बच्चों एवं महिलाओं के लिए प्रतियोगिता का आयोजन के साथ बच्चों को पुरुस्कार वितरण, मिठाई वितरण, गौशाला में गायों के लिए चारे की व्यवस्था।
- अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस एवं बालिका दिवस पर महिला एवं किशोरियों किसानो को उनके अधिकारों के प्रति जागरूक करने के साथ स्वास्थ्य सम्बन्धी जानकारी प्रदान की गई।
- शहीद दिवस पर रक्तदान शिविर का आयोजन एवं रक्तदाताओं को हेलमेट वितरण।

स्वयं सहायता समूह गठन कार्यक्रम-नाबार्ड
Self Help Group Formation Programme-Nabard

ग्रामीण महिला विकास संस्थान, बूबानी–अजमेर के द्वारा पिछले 22 वर्षों से अजमेर व नागौर जिले में महिला सशक्तिकरण हेतु महिला स्वयं सहायता समूह गठन व संचालन निरन्तर किया जा रहा है। गठित महिला समूहों में महिलाओं को संगठित किया जाता है। क्योंकि समूह स्तर पर महिलाओं को एक मंच प्रदान किया जाता है। इस मंच पर महिलायें एकत्रित हो कर सर्वप्रथम आर्थिक स्तर के बारे में मंथन करके महिलाओं को छोटी–छोटी बचत करना सिखाया जाता है। समूह गठन के 6 माह बाद समूह को बैंक से जोड़ा जाता है। ताकि महिलाओं को वित्तीय जानकारी मिले। बैंक में समूह के नाम से बचत खाता खोला जाता है और जब समूह को लोन की आवश्यकता हो तब समूह बैंक से लोन लेने के लिए आवेदन कर सकता है।

ग्रामीण महिला विकास संस्थान, बूबानी–अजमेर के द्वारा वर्तमान में अजमेर जिले समुह से जुड़ी महिलाओं को 15 हजार से 75 हजार रूपये बैंक लोन समूह गारंटी पर मिल जाता है। जिससे महिला अपनी आजीविका को बढ़ाने का कार्य कर सकती है। महिला समूहों का गठन ग्रामीण क्षेत्रों में किया जाता है ताकि महिलायें आत्मनिर्भर बन सकें। इस प्रकार महिलायें स्वयं सहायता समूह के माध्यम से ग्राम पंचायत, अन्य सरकारी व गैर सरकारी संस्थाओं के सम्पर्क में आने से सामाजिक विकास में भी भागीदारी सुनिश्चित हो रही है। संस्थान उसी उद्देश्य के अनुरूप कार्य कर रही है।

संस्थान ने आई.सी.आई.सी.आई. बैंक के साथ जुडकर समूहो को उनकी आवश्यकता के अनुसार बैंक लोन दिलवाती है। समूह को प्रथम लोन प्रति महिला को 15000/– रू. का दिलवाती है ताकि महिला को बैंक और समूह में लेनदेन की जानकारी हो सके उसके बाद समूह की बचत के अनुसार आई.सी.आई.सी.आई. बैंक लोन देती है। आई.सी.आई.सी.आई. बैंक हर माह संस्थान द्वारा संचालित समूहों को 2 से 3 करोड रूपये का बैंक लोन देती है। समूहो की 100 % रिकवरी है जो कि समूहो की गुणवत्ता और जागरूकता को दर्शाती है।

उद्देश्य–

1. अलग–अलग महिलाओं को एक समूह में संगठित करना।
2. महिलाओं को जागरूक करना।
3. महिलाओं को समूह के माध्यम से बैंक से जुड़ाव करना।
4. बैकों से ऋण की पूर्ति करना।
5. महिलाओं को स्वरोजगार के प्रति जागरूक करना।
6. महिलाओं के हुनर को निखारना।
7. सरकारी व गैर सरकारी संगठनों से जुड़ाव करना।
8. प्रशिक्षणों के माध्यम से क्षमतावर्धन करना।
9. शिक्षित करना।
10. स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता लाना।
11. महिलाओं द्वारा बनाये गये उत्पाद को उचित दामों में बाजार में बेचना।
12. बाल विवाह व कन्या भ्रूण हत्या को रोकना।
13. ज्यादा से ज्यादा महिलाओं को रोजगार से जोड़ना।

रणनीति :–

- महिलाओं को जागरूक करके सरकारी व गैर सरकारी गतिविधियों में ज्यादा सहभागी बनाना।
- क्षेत्र, गाँव व महिलाओं का चयन करके समूह गठन करना।
- बचत की आदत निरन्तर डालना।
- बैंकों से जोडकर ऋण उपलब्ध करवाना।
- महिलाओं की आवश्यकता पढने पर महिलाओं से मदद करवाना।

समूह बचत खाता खुलवाना– महिला स्वयं सहायता समूहों का गठन करके 6 माह बाद ICICI बैंक में समूह का बचत खाता खुलवाया जाता है ताकि समूह का बैंक से जुड़ाव हो सके और बैंक की गतिविधियों को जान सके। जब समूह को ऋण लेने की आवश्यकता हो तो बैंक लोन के लिए समूह आवेदन कर सके।

समूह सदस्यों को बीमा से जोड़ना– महिला समूह के सदस्यों को बीमा के प्रति जागरूक करना और लोन का बीमा के साथ जीवन बीमा से जोड़ना ताकि भविष्य में महिला के साथ किसी प्रकार की दुर्घटना हो तो उसके परिवार को बीमा से अधिक सहायता मिल सके।

शिविरों का आयोजन– स्वयं सहायता समूह से जुड़ी महिलाओं को स्वास्थ्य शिविरों से जोड़कर लाभान्वित किया। जैसे कि महिला कानून, श्रमिक के अधिकार, श्रमिक कार्ड बनवाना, परिवार नियोजन शिविर इत्यादि शिविरों के साथ हर वर्ष महिला दिवस कार्यक्रम का आयोजन किया जाता है। उसमे महिलाओं द्वारा किये गये कार्यों व अनुभवों का आपस में बताया जाता है। ताकि एक दूसरी महिलाओं से प्रेरणा मिलती है।

समूह प्रशिक्षण– महिला स्वयं सहायता समूहों का क्षमतावर्धन, लीडरशीप, लघु उद्योग व समूह संचालन के प्रशिक्षण समय–समय पर दिये जाते है। ताकि समूहों की गुणवत्ता बनी रहे और समूह सदस्यों को रोजगार से जोड़ा जा सके।

समूह ऑडिट– संस्थान द्वारा गठित समूहों की हर वर्श ऑडिट की जाती है, और समूहों की वित्तीय स्थिति का आंकलन किया जाता है। ऑडिट के बाद समूह लाभांश भी सदस्यों को वितरण किया जाता है।

समूह ग्रेडिग– महिला स्वयं सहायता समूहो की गुणवता को जाँचने के लिए ग्रेडिंग की जाती है और ग्रेडिंग के बाद जो भी समूह मे खामियाँ रहती है उसके लिए योजना बनाकर प्रशिक्षण दिया जाता है।

समूह बैंक लोन– जब समूह गठन के 6 माह बाद समूह का बचत खाता खुल जाता है तब समूह बैंक से लोन लेने के लिए आवेदन करता है। बैंक लोन लेने के समय समूह के सभी सदस्यों का उपस्थित होना आवश्यक होता है ग्रुप फोटो ली जाती है ताकि भविष्य कोई महिला इंकार नही कर सकती है क्योंकि ग्रुप फोटो के साथ लोन फाईल में समूह के सभी सदस्यों में जानकारी रहती है। लोन लेते समूह लोन राशि, लोन किश्त कितने माह में चुकता करना और बैंक लोन पेनल्टी के बारे में सभी सदस्यों को जानकारी रहती है।

आजीविका वर्धन गतिविधियाँ– ग्रामीण महिला विकास संस्थान, बूबानी–अजमेर के द्वारा गठित महिला स्वयं सहायता समूहों का गठन व संचालन किया जा रहा है। समूहों को बचत के साथ–साथ आजीविका वर्धन की

गतिविधियों की जानकारी दी जाती है। और समय–समय पर प्रशिक्षित किया जाता है। ताकि महिला आत्मनिर्भर बने और आर्थिक रूप से भी सक्षम हो सके। संस्थान विभिन्न सरकारी और गैर सरकारी संस्थाओं के माध्यम से आजीविका वर्धन गतिविधियों से जोड़ने में सफल होती है। ताकि समूह की महिला बैंक से लोन लेती है उसे समय पर बैंक को वापिस चुकता करने में सक्षम होती है।

महिला स्वयं सहायता कार्यक्रम अन्तर्गत भिनाय ब्लॉक के 50 सदस्यों को कस्टमर हाईजिंग प्रोग्राम से जोड़ा गया जिसमें प्रति सदस्य 2.30 घण्टा टैक्टर द्वारा खेती का कार्य किया गया जो 100 प्रतिशत मुफ्त था महिला सदस्यों को लगभग 100000/– रूपये का सीधा लाभ मिला साथ समय पर कार्य पूर्ण हो गया।

कोरोना के प्रति जागरूकता :–

संस्थान द्वारा समूह की महिलाओं को कोरोना रूपी महामारी से स्वयं को व अपने समुदाय को सुरक्षित रखने के लिये आवश्यक दिशा निर्देश दिये गये। जिसके अन्तर्गत ग्रमीण क्षेत्रों में संस्थान द्वारा गाँव वालों को मास्क, सेनेटाइजर, सनेटरी नेपकिन व खाद्य सामग्री (2 किलो चावल, 5 किलो आटा, 2 किलो आलू, 2 किलो प्याज, 1 किलो शक्कर, 500 ग्राम चाय, 1 किलो नमक, 500 ग्राम मिर्ची, 250 ग्राम धनिया, 250 ग्राम हल्दी आदि) के पैकेट बनाकर वितरित किया गया। राहगीरों को चप्पलें व खाने के पैकेट बाँटें गये।

खाद्य सामग्री वितरण कार्यक्रम मिलाप फंड रेज–टॉक्यो ऑफ इण्डिया
Food Items Distribution Program Milaap- Tokyo Of India

इस वर्ष कार्यक्रम के अर्न्तगत संस्थान द्वारा Milaap Fund Raise – Tokyo Of India के आर्थिक सहयोग से जरूरतमंद लोगों को खाद्य सामग्री वितरण की गतिविधियाँ की गई। टीम ने अजमेर व भिनाई के ग्रामीण क्षेत्रों में खाद्य सामग्री वितरण का कार्य किया। टीम ने 250 खाद्य सामग्री किट तैयार कर वितरण किया। अजमेर के उन गाँवों के नाम जहाँ खाद्य सामग्री का वितरण किया गया इस प्रकार है। खोड़ा गणेश, दांता, नरगल, बुबानी, धमेड़ी, शाला की ढाणी, गोदियावास, कालबेलियो की ढाणी, हरनिया का नाका और किशनगढ़ ग्रामीण क्षेत्र। पंचायत समिति भिनाई के उदयपुर खेड़ा, बडाला खेड़ा व खायड़ा गांव में है तथा चित्तौड़गढ़ के सावा, निम्बाहेड़ा, कपासन और चंदेरिया क्षेत्रों में खाद्य सामग्री (गेहूं का आटा, दाल, चावल, चीनी, खाना पकाने का तेल, नमक, हल्दी, मिर्ची, धनिया, हैंड वॉश, मास्क, साबुन, दस्ताने) और सैनिटरी नैपकिन का वितरण भी किया गया। उपरोक्त सामग्री को एक किट में पैक करके प्रत्येक परिवार में वितरीत किया गया।

सहयोगी संस्थाएं –

1. द् हंस फाउण्डेशन, नई दिल्ली।
2. नाबार्ड–जयपुर।
3. सेन्टर फॉर माइक्रोफाईनेन्स–जयपुर।
4. अरावली–जयपुर।
5. चोलामण्डलम–तमिलनाडु (चैन्नई)।
6. साईट सेवर, नई दिल्ली।
7. मिनाक्षी मिशन हॉस्पिटल और रिसर्च सेन्टर (विटामिन ऐन्जल)– तमिलनाडु।
8. राजस्थान स्टेट एड्स कण्ट्रोल सोसायटी–जयपुर।
9. आई.सी.आई.सी.आई. बैंक–जयपुर।
10. भारतीय जीवन बीमा निगम–अजमेर।
11. यू.एन.डी.पी. नई दिल्ली।
12. भारत सरकार की संस्था सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम मंत्रालय।

GRAMIN MAHILA VIKAS SANSTHAN (GMVS)

Organizational Structure

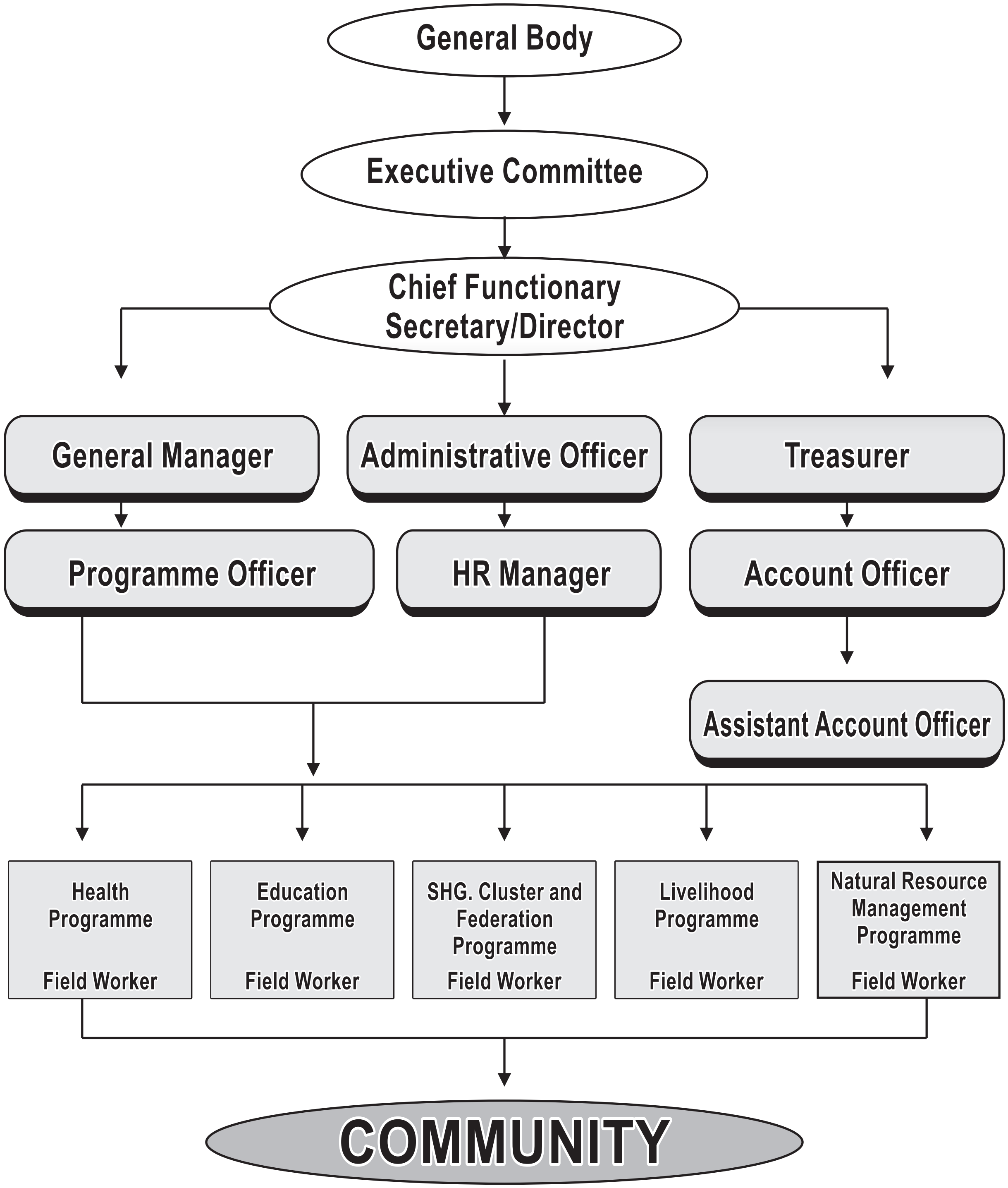

GRAMIN MAHILA VIKAS SANASTHAN

Consolidated

Arbridged Receipt and Payment Account

(For The year 01.04.2021 To 31.03.2022)

RECEIPTS	AMOUNT	PAYMENTS	AMOUNT
Opening Balance		Project Expenses	15722176
Cash In Hand	579875	Bank Charges	3113
Cash At Bank	1726334	Computer Repair Expenses	6000
		Office Expenses	2059324
Projects Grant Received	12289438	Audit Fees	17823
Tender fees From SFURTI Millet	50000	Furniture	88895
Donation	1080171	Computer	122700
Bank Interest	9090	**Closing Balance**	
Membership Fees	16500	Cash In hand	9304
Tender Fees	150000	Cash At Bank	569969
Received For PF From Raahi	44070		
Exposure visit Recpt	61450		
Loans and Advances	592376		
Aditya Herbal Loan	2000000		
Total	**18599304**	**Total**	**18599304**

Arbridged Balance Sheet as on 31.03.2022

LIABILITIES	AMOUNT	ASSETS	AMOUNT
General Fund-Main	6,53,439	**Fixed Assets**	1376934
General Fund of Projects	1,64,561	**Current Assets, Loans & Advance**	
Current Liabilities		Grant Receivable From TI	7697782
Liability & Payables	94,57,174	TDS Receivable	1595467
Aditya Herbal Ltd Loan	20,00,000	Excess of Exp. over income Truckers	1045718
Loan from Members	20,000	Cash In Hand	9304
		Cash At Banks	569969
	1,22,95,174		**1,22,95,174**

For S S Verma & Co
Chartered Accountants

(S. S. Verma)
Prop.
06/09/2023, Jaipur

S. VERMA & CO.
CA
Chartered Accountants

For Gramin Mahila Vikas Sansthan

(Shankar Singh Rawat)
Secretary
सचिव
ग्रामीण महिला विकास संस्थान
बूबानी, किशनगढ़
जिला–अजमेर (राज.)

सुर्खियों में ...

ग्रामीण महिला विकास संस्थान

राही ट्रकर्स आई हेल्थ कार्यक्रम, अजमेर

GMVS

सुर्खियों में ...

ग्रामीण महिला विकास संस्थान

बाजरा प्रसंस्करण एवं मूल्य संवर्धन कार्यक्रम

GMVS

सुर्खियों में ...

ग्रामीण महिला विकास संस्थान

ग्वारगम और इसबगोल प्रसंस्करण कार्यक्रम, नागौर

सुर्खियों में ...

ग्रामीण महिला विकास संस्थान

हंस मोबाईल मेडिकल सर्विसेज कार्यक्रम

सुर्खियों में ...

ग्रामीण महिला विकास संस्थान

टारगेट इन्टरवेन्शन कार्यक्रम, चित्तौड़गढ़

सेवाओं में बढ़ते कदम

ग्रामीण महिला विकास संस्थान (GMVS)

मुख्य कार्यालय

ग्राम व पोस्ट–बूबानी,
वाया–गगवाना
जिला–अजमेर
305023 (राज.) भारत
मोबाईल : +91–9672979032
ई–मेल :
bubanigmvs@gmail.com
Visit us : www.gmvs.ngo

क्षेत्रीय कार्यालय

एन.एच. 79, प्यारे पंजाब होटल,
हमीरगढ़, जिला–भीलवाड़ा
311025 (राज.) भारत
मोबाईल : +91–9079207103
मोबाईल : +91–9829835177
ई–मेल :
gmvsajmer@gmail.com

क्षेत्रीय कार्यालय

125, भगतसिंह पार्क,
सामुदायिक भवन के पास,
चित्तौड़गढ़ (राज.) भारत
मोबाईल : +91–9929259050
मोबाईल : +91–9829133882
ई–मेल :
gmvschittorgarh@gmail.com

क्षेत्रीय कार्यालय

ग्राम–बासनीजग्गा, पोस्ट–लाडपुरा
तहसील–रियांबडी
जिला–नागौर (राज.) भारत
मोबाईल : +91–9672979033
ई–मेल :
ssrawatgmvs@gmail.com